वर्ष 1, अंक 1 (प्रवेशांक)
अक्टूबर - दिसम्बर 2021

सहयोग राशि : ₹ 60.00

आंबेडकरवादी साहित्य

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय लोकानुकम्पाय के दर्शन
पर आधारित त्रैमासिक पत्रिका

आंबेडकरवादी गीतकार एवं गायक विशेषांक

समस्त देशवासियों को
धम्मदीक्षा दिवस (14 अक्टूबर)
व संविधान दिवस (26 नवम्बर)
की हार्दिक बधाई
एवं मंगल कामनाएं।

प्रो. धर्मपाल बौद्ध

अध्यक्ष-समता साहित्य समिति, हैदराबाद
सम्पर्क - 9247486278, 8106487604

डॉ. आर. एम. राव 'मनोहर'

प्रबंधक शिवदुलारी मेमोरियल विश्वेश्वर प्रसाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
अम्बेडकर ग्राम चक हटेली, हथगांव, थाना, फतेहपुर, उ.प्र.
सम्पर्क - 7060240326

डॉ. बी. आर. बुद्धप्रिय

(आंबेडकरवादी साहित्यकार, चिंतक एवं समाजसेवी)
बरेली, उ.प्र.
सम्पर्क 9412318482

रघुवीर सिंह नाहर

(आंबेडकरवादी कवि)
अलवर, राजस्थान
सम्पर्क - 9413058580

राधेश विकास

झयाट प्रवक्ता
हनुमानगंज, देवरिया, प्रयागराज
सम्पर्क 9956824322

आनन्द कुमार सुमन

(आंबेडकरवादी कवि)
सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.
सम्पर्क 9838909065

संरक्षक
डॉ0 आर0एम0 राव 'मनोहर', बरेली
श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी', बरेली
रघुवीर सिंह 'नाहर', राजस्थान

सलाहकार मंडल
बुद्ध शरण हंस, पटना
प्रो. (डॉ0) धर्मपाल बौद्ध, हैदराबाद
डॉ0 जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली

संपादक
देवचंद्र भारती 'प्रखर'
मो.- 9454199538
ambedkarvadisahitya@gmail.com

संपादक मंडल
डॉ0 बी0 आर0 बुद्धप्रिय, बरेली
डॉ0 मुकुन्द रविदास, धनबाद
भूपसिंह भारती, हरियाणा
आनंद कुमार 'सुमन', सिद्धार्थ नगर
राधेश विकास, प्रयागराज

संपादकीय कार्यालय
शी 19/100, भीम नगर कालोनी
सनबीम वरुणा के पास, कचहरी
वाराणसी (उ.प्र.) 221002

स्वामी एवं प्रकाशक देवचंद्र भारती 'प्रखर' द्वारा गौतम प्रिंटर्स, सी.27/111-बी, जगतगंज, वाराणसी (उ.प्र.)-221002 से प्रकाशित किया।

आंबेडकरवादी साहित्य

बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानुकम्पाय के दर्शन पर आधारित त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 1, अंक 1 (प्रवेशांक), अक्टूबर-दिसम्बर 2021

संपादकीय :
आंबेडकर- मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु सबसे सशक्त साहित्यिक विधा है- 'गीत'

आलेख :
आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रेरित मराठी भीमगीतों का योगदान
भीमराव गणवीर / 06

आंबेडकरवादी गीतकार एवं उनके गीत
सूरजमल सितम, डॉ. धर्मपाल बौद्ध, सुखबीर सिंह बौद्ध
भूपसिंह भारती, प्रबुद्ध नारायण बौद्ध, सुरेंद्र आंबेडकर
चन्दन कुमार, देवचंद्र भारती 'प्रखर' /12-30

आंबेडकरवादी गायकों का परिचय
जयप्रकाश राही, विशाल गाजीपुरी, रविराज बौद्ध
जालंधर बागी, प्रीति बौद्ध, सपना बौद्ध, पंकज राज
मजनू गौतम, आराधना बौद्ध /31-36

कविताएँ एवं ग़ज़लें
श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी', डॉ. राम मनोहर राव
रघुवीर सिंह 'नाहर', बी.आर. बुद्धप्रिय, नविला सत्यादास
एस.एन. प्रसाद, राधेश विकास, कुंवर नाजुक
देवचन्द्र भारती 'प्रखर', सुनीता बौद्ध, सूरजपाल
अमित कुमार बौद्ध /38-50

पुस्तक समीक्षा :
डॉ0 बुद्धप्रिय की कविताओं में अस्मिता एवं संघर्ष की भावना
देवचन्द्र भारती प्रखर / 51

संपादक के नाम पत्र

आंबेडकरवाद के संबंध में भरम की गुंजाइश नहीं रहेगी।

बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकनुकम्पाय के दर्शन पर आधारित 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका त्रैमासिक का जुलाई-सितम्बर 2021 के अंक का विषय ''आंबेडकरवाद-दिशा एवं दृष्टि'' है। मैंने पत्रिका का विधिवत अध्ययन किया। मेरा मानना है कि किसी भी पत्रिका का सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र 'सम्पादकीय' होता है। प्रस्तुत अंक में आंबेडकरवाद- दिशा एवं दृष्टि में 'वाद' का अर्थ कथन, सिद्धान्त आदि बताते हुए संपादक आदरणीय 'प्रखर' जी ने अच्छी विवेचना की है। वे बताते हैं कि आंबेडकरवाद का अर्थ है- आंबेडकर का सिद्धान्त एवं आंबेडकर की विचारधारा। डॉ. आंबेडकर की विचारधारा में प्रमुख रूप से अनीश्वरवाद, अनात्मवाद, समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व एवं प्रेम आदि तत्त्वों का समावेश है। 'प्रखर' जी आगे बताते हैं कि डॉ. आंबेडकर की विचारधारा में तथागत बुद्ध, संत कबीर, गुरु रैदास, ज्योतिराव फुले, पेरियार रामास्वामी, नारायण गुरु और संत गाडगे आदि महापुरुषों के विचार समाविष्ट हैं। वे आंबेडकरवादी व्यक्ति की पहचान के लिए आंबेडकरवादी चेतना के दस बिंदु निर्धारित करते हुए लिखते हैं कि आंबेडकरवादी होने के लिए इन सबका पालन करना अनिवार्य है।

निःसन्देह श्रद्धेय 'प्रखर' जी की सोच विलक्षण है। उनका मानना है कि आंबेडकरवाद व्यापक मानवीय विचारों/सिद्धांतों का समुच्चय है। किसी भी दशा में बाबा साहेब के विचारों को किसी जाति विशेष तक सीमित नहीं रखा जा सकता। सम्मानित संपादक के विचार आंबेडकरवादी चेतना से परिपूर्ण हैं। इस अंक के संपादकीय को पढ़ने और समझने के बाद मुझे विश्वास है कि आंबेडकरवाद के संबंध में किसी को भरम की गुंजाइश नहीं रहेगी। इस अंक में कुल आठ साहित्यकारों के आलेख छपे हैं, सभी उपयोगी हैं। बुद्ध शरण हंस का आलेख ''डॉ. आंबेडकर का कारवाँ क्या है,'' डॉ. जयश्री शिंदे का आलेख ''आंबेडकरवाद में स्त्री दृष्टिकोण'' अत्यंत प्रभावशाली है। कवियों में एस.एन. प्रसाद, रघुवीर सिंह 'नाहर' तथा राधेश विकास की कविताएँ आंबेडकरवादी चेतना से ओतप्रोत हैं। डॉ. राममनोहर की काव्यकृति ''तीसरी आजादी की जंग'' की समीक्षा देवचन्द्र भारती 'प्रखर' जी द्वारा बड़ी ईमानदारी से साहित्यिक विधा के प्रतिमानों को दृष्टि में रखकर की गयी है। पाठक की हैसियत से मेरा अनुरोध है कि प्रत्येक अंक में सभी विधाओं के कमोवेश समावेश करने पर संपादक-मंडल विचार करेगा।

आशा एवं विश्वास है कि आगामी अंक भी वंचित समाज के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी होगा। अंत में, आदरणीय 'प्रखर' जी को पत्रिका के कुशल

संपादन तथा सभी साहित्यकारों को हार्दिक मंगलकामनाएँ तथा अनन्त बधाईयाँ।

कु. संध्या वर्मा

438, युनिटी सिटी, कुर्सीरोड, लखनऊ।

हिंदी साहित्य के इतिहास में एक नई धारा।

प्रिय संपादक महोदय, सस्नेह जय भीम नमो बुद्धाय!

मैं 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका की नियमित पाठक हूँ। जबसे इस विचारधारा से जुड़ी हूँ, साहित्य में मार्गदर्शन हेतु सुधी महानुभावों की खोज कर रही थी, मेरी यह खोज पूर्ण हो चुकी है। इस पत्रिका में देश के जाने-माने साहित्यकारों के मार्गदर्शन और सानिध्य में मेरी लेखनी अच्छा और अच्छा लिखने के लिए प्रयासरत है। हिंदी साहित्य के इतिहास में नई धारा (आंबेडकरवादी धारा) के स्तंभ हैं आप। आपकी प्रखर और पैनी नजर की आलोचना बहुजन साहित्य को त्रुटियों से अवगत कराएगी, उसे निखारने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहेगी। 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के सभी अंक प्रेरणादायी, सराहनीय और ज्ञानवर्धक हैं।

मेरी मंगलकामनाएँ हैं कि यह पत्रिका विश्वपटल पर अपनी छवि शीघ्र अतिशीघ्र अंकित करे। यथा-

प्रखर अपने पुंज से, करो अनूठे काम।
बहुजन के साहित्य में, होय शिखर पर नाम।।

सुनीता बौद्ध

टून्डला, फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

राष्ट्र को नई चेतना के उच्च शिखर की ओर ले जाने का अनुपम प्रयास।

आदिकाल से आधुनिक काल तक एक से बढ़कर एक लेखक, कवि, आलोचक उदित हुये हैं, जिनमें डॉ. आंबेडकर द्वारा रचित संविधान को गौरवशाली भारतवर्ष की कानूननीति का दर्जा प्राप्त हुआ। उनकी प्रखरता को उनके नियम-नीतियों को समाज के प्रत्येक क्षेत्र में प्रख्यात करने का काम 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के संपादक महोदय देवचन्द्र भारती 'प्रखर' जी कर रहे हैं। पत्रिका के पहले, दूसरे और तीसरे अंक में विविध विषयों, मुद्दों के माध्यम से आंबेडकरवादी साहित्य को उजागर करने और समाज का ज्ञानवर्धन करने की इनकी ये कोशिश सराहनीय है।

लोगों की कूटनीतियों के बीच आकर राष्ट्र को नई चेतना के उच्च शिखर की ओर ले जाना 'प्रखर' जी की संघर्षशीलता को दर्शाती है। वर्ण, रंग, आकार, आकृति के आधार पर विद्वानों का जो शोषण होता था, भिन्न-भिन्न प्रकार के जातिसूचक शब्दों से प्रताड़ित जनता की पीड़ा हरने का इनका ये प्रयास अनुपम है। आंबेडकर को मुद्दा बनाकर सड़कों पे उछलने वाले नायकों में कितने लोग आंबेडकर-नीति समझते है, पूछा जाए, तो आसमान के तारे गिनने लगेंगे। मैं कोई आलोचक तो नहीं, परन्तु एक कलमकार होने के नाते निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से सच कहने की हिम्मत रखती हूँ-

''कब तलक करते रहोगे झूठ की सच्ची वकालत,
अपने गिरेबाँ में झाँको देखो पहले खुद की हालत।''

इन्हीं गलत नीतियों के कारण जाति भेद, वर्ण भेद, लिंग भेद जैसी अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जिससे निपटने के लिए जन-जन को आगे आना होगा। चंद लोगों की भीड़ से, महज़ कुछ नारों से कोई बदलाव नहीं आएगा।

कु. ज्योति किरण,
(सुप्रसिद्ध कवयित्री)
गोपालगंज, बिहार

संपादकीय

आंबेडकर- मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु सबसे सशक्त साहित्यिक विधा है- 'गीत'

''मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर,
लोग साथ आते गये और कारवाँ बनता गया।''

मजरूह सुल्तानपुरी ने किसे ध्यान में रखकर यह शेर लिखा है? यह तो पता नहीं, लेकिन यह शेर तथागत बुद्ध, संत रैदास, संत कबीर, महामना ज्योतिराव फुले और बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर आदि महापुरूषों के व्यक्तित्व पर पूरी तरह लागू होता है। ये सभी महापुरुष अपने-अपने मार्ग पर अकेले ही चले थे और कालांतर में हजारों-लाखों लोग उनके अनुयायी हो गये। इन सभी महापुरुषों का जीवन दर्शन और मिशन भले ही अलग-अलग शाखाओं के रूप में दिखाई दे रहे हों, लेकिन उनका आधार एक ही जड़ से जुड़ा हुआ है। इसलिए इनके मिशन को अलग-अलग नाम देने की बजाय केवल एक ही नाम देना पर्याप्त है, वह नाम है- 'आंबेडकर मिशन'। 'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के तीसरे अंक की संपादकीय 'आंबेडकवाद : दिशा एवं दृष्टि' में मैंने इस तथ्य का स्पष्टीकरण कर दिया है कि आंबेडकर मिशन अर्थात् आंबेडकरवादी विचारधारा के अंतर्गत बुद्ध, रैदास, कबीर, फुले आदि अनेक महापुरूषों की विचारधारा का समावेश है। यही कारण है कि आंबेडकरवादी लोग इन सभी महापुरूषों का और अलग-अलग राग अलापने वाले इनके सभी अनुयायियों का समान भाव से सम्मान करते हैं।

आंबेडकर-मिशन को साहित्य के माध्यम से गति प्रदान करने वाले आंबेडकरवादी साहित्यकार अनेक साहित्यिक विधाओं के द्वारा आंबेडकरवादी विचारधारा का प्रचार-प्रसार करते आये हैं, जिनमें गीत-विधा प्रमुख है। 'गीत' आंबेडकर-मिशन के प्रचार-प्रसार हेतु सबसे सशक्त साहित्यिक विधा है।

कुछ दशकों से आंबेडकरवादी मिशनरी गीतों के लेखन और गायन की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। समाज में आंबेडकरवादी गीतों के नाम से चर्चित मिशनरी गीतों का यदि वर्गीकरण किया जाए, तो वह इस प्रकार होगा :

1. राजनैतिक आंबेडकरवादी गीत
2. सामाजिक आंबेडकरवादी गीत
3. धार्मिक आंबेडकरवादी गीत
4. साहित्यिक आंबेडकरवादी गीत

राजनैतिक आंबेडकरवादी गीतों के अंतर्गत मान्यवर कांशीराम एवं बहन कुमारी मायावती के महिमागान सहित बहुजन समाज पार्टी के प्रचार-प्रसार संबंधी गीतों का लेखन और गायन प्रचलित है। सामाजिक आंबेडकरवादी गीतों के अंतर्गत डॉ0 आंबेडकर की जीवनकथा व अन्य बहुजन समाज के महापुरूषों के जीवन-चरित्र तथा सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों, अंधविश्वासों आदि को आधार बनाकर लिखी गयी गीतों के गायन और श्रवण का प्रचलन है। धार्मिक आंबेडकरवादी गीतों के अंतर्गत तथागत बुद्ध और डॉ. आंबेडकर के महिमागान तथा बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार संबंधी गीतों का लेखन और गायन प्रचलित है। साहित्यिक आंबेडकरवादी गीतों के अंतर्गत डॉ. आंबेडकर की जीवनकथा व अन्य बहुजन समाज के महापुरुषों के जीवन-चरित्र तथा सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों, अंधविश्वासों आदि को आधार बनाकर लिखे गये गीतों के गायन और श्रवण का प्रचलन है। साहित्यिक आंबेडकरवादी गीतों के अंतर्गत उक्त तीनों प्रकारों में से केवल सामाजिक और धार्मिक चिंतन का मिश्रण होता है। साहित्यिक आंबेडकरवादी गीतों का विषय बहुजन समाज पार्टी के प्रचार-प्रसार अथवा बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम और बहन कुमारी मायावती के यशगान से संबंधित नहीं होता है। लेकिन इस तरह की साहित्यिक आंबेडकरवादी गीतों का अत्यंत अभाव है। इस अभाव की पूर्ति करने के लिए ही एक तुच्छ प्रयास के रूप में वर्तमान अंक को प्रकाशित करने की योजना बनाई गयी। आशा है, साहित्यिक आंबेडकरवादी गीतों की विषय-वस्तु, भाषा-शैली और चिंतन-दृष्टि का स्वरूप निर्धारित करने में इस पत्रिका का वर्तमान अंक सफल सिद्ध होगा।

- देवचंद्र भारती 'प्रखर'

आलेख

भीमराव गणवीर
सीताबडी, नागपुर (महाराष्ट्र)
मो.: 9763282051

आंबेडकरवादी विचारधारा से प्रेरित मराठी भीमगीतों का योगदान

महामानव विश्वरत्न डॉ. बाबा साहब आंबेडकर एक युगपुरुष थे। उनका समग्र जीवन संघर्ष, कृतित्व, लेखन, समाजोद्धार का कार्य एवं दलित शोषितों की मानवीय अधिकारों की बहाली के लिए ही था। समस्त शोषित, पीड़ित अछूतों के सर्वांगीण विकास का सपना देखकर अपने जीवनकाल में ही उन्होंने जातिवादी, वर्णवादी व्यवस्था के खिलाफ सामाजिक, धार्मिक, राजकीय, वैचारिक आंदोलन किया। निरंतर हिंदू धर्म व्यवस्था की ऊँच-नीच शोषण व्यवस्था, कर्मकाण्ड अस्पृश्यों पर ढाए जा रहे जुल्मो सितम पर कड़ा प्रहार किया। अपने जीवन संघर्ष में महाड का सत्याग्रह, मनुस्मृति दहन, कालाराम मंदिर प्रवेश, सत्याग्रह तथा समता सैनिक दल, भारतीय बौद्ध महासभा, स्वतंत्र मजदूर पक्ष, शेडुल्ड कास्ट फेडरेशन, भारतीय रिपब्लिकन पार्टी की संकल्पना स्थापित की। उसी तरह अपनी अशिक्षित जनता को ज्ञानवान बनाकर संघर्ष के लिए प्रेरित करने हेतु मूकनायक, बहिष्कृत भारत, जनता जैसे समाचार पत्र प्रकाशित कर जन-जन में चेतना निर्माण की। वे बचपन से ही जाति व्यवस्था के शिकार हुए। उन्हें अछूतों के गहन दर्द का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। उन्होंने जातिव्यवस्था के विरोध में संगठित संघर्ष प्रारम्भ किया।

समाजोद्धार के इस कार्य में उनके पिता जी महामना सुभेदार रामजी संकपात्र (आंबेडकर) जी प्रेरणा स्त्रोत बने। बडौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाद ने ठुस्कर गुरुजी की विनती से शिष्यवृत्ती देकर विदेश में उच्च शिक्षा लेने के लिए आर्थिक मदद की। उच्च विद्या विभूषित होकर भी उन्होंने अछूतोद्धार का कार्य करने का संकल्प किया। वे देश के सच्चे देशप्रेमी तथा प्रथम और अंत तक भारतीय रहे। परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभाकर आई साहब रमाबाई आंबेडकर का सहयोग अतुलनीय कहा जाएगा।

डॉ. आंबेडकर दुनिया भर के सुप्रसिद्ध विद्वान थे और आज भी उनकी बौद्धिक विद्वत्ता का लोहा माना जाता है। उन्होंने संविधान निर्मिती की जिम्मेदारी अथक परिश्रम, स्वास्थ्य की ओर दुर्लभ कर बखुबी निभायी। इसमें भाईसाहब सविता आंबेडकर का सहकार्य नकारा नहीं जा सकता। सदर्भ डॉ. आंबेडकर विश्वरत्न ही नहीं तो मैत्रेय बुद्ध कहलाने के अधिकारी है। उनकी वैज्ञानिक दृष्टी, गहन चिकित्सा से परिपूरीत विवेकशील लेखन सभी भारतीयों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बना हुआ है। जिससे सैकड़ों बुद्धिवादी लेखक, चितकों का निर्माण हुआ है। उनके लाखों अनुयायी पद-लिखकर अनेकों प्रतिष्ठित पदों पर विराजमान हुए है। उसमें कवि, गीतकार, लेखक, चिंतक वकील, न्यायाधिश, डॉक्टर, इंजिनियर, प्राध्यापक, अर्थशास्त्री, अधिकारी, विधायक, सांसद, मंत्री, समाज सेवक,

वैज्ञानिक आदि का अंतर्भाव है। डॉ. बाबा साहब की विचारधारा की उपयोगिता सामान्य जनमानस के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत ही सहायक सिद्ध हो रही है। दुनिया भर में उनकी जयंती मनाई जाती है।

हमें इस आलेख में डॉ. आंबेडकर की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में मराठी भीम गीतों ने कैसा-योगदान दिया यह प्रतीकात्मक रूप से प्रस्तुत करना है। डॉ. आंबेडकर के विचारों से प्रेरणा लेकर महाराष्ट्र में ही नहीं अपितु सारे भारत में दलित साहित्य की निर्मिति होने लगी। दलित साहित्य अन्याय अत्याचार के विरूद्ध विद्रोह का प्रतीक बनकर उभरा। उपन्यास, कहानी, कविता, गीत, लेख, नाटक, संशोधन तथा स्वकथन के क्षेत्र में हजारों लेखक, कवि, गीतकारों ने वैज्ञानिक, बुद्धिवादी विचारों से समाजोत्थान में अपना चिंतन प्रस्तुत किया। सदियों से हुए अन्याय, अत्याचारों को उजागर किया। अब बीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध से दलित साहित्य ने आंबेडकरवादी साहित्य की सच्ची अवधारणा को स्वीकार किया तथा समता, स्वतंत्रता, भाईचारा एवं सामाजिक न्याय जैसे मौलिक विचारों से तमाम अनुसूचित जाति-जनजाति अन्य पिछड़ा वर्ग, आदिवासी तथा अल्पसंख्यक समुदायों के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी कलम से लेखन प्रारम्भ किया है। इसके साथ ही वंचितों पर होने वाले जातीय अत्याचारों के विरोध में दलित पैंथर आदि संघटनों ने संगठित होकर आंदोलन किया। अन्याय पिड़ितों को न्याय प्राप्त करवा दिया।

डॉ. आंबेडकर जी का महापरिनिर्वाण 6 दिसंबर 1956 को हुआ। इसके पूर्व उन्होंने 1956 को नागपुर में अपने लाखों अनुयायियों के साथ बुद्ध धम्म की दीक्षा ली। यह एक सारी दुनिया की सबसे अभूतपूर्व धम्म की दीक्षा ली। यह एक सारी दुनिया की सबसे अभूतपूर्व धम्म क्रांन्ति कहलायी। डॉ. आंबेडकर जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में देश का सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न मरणोपरान्त भारत सरकार द्वारा प्रदान किया गया जिसे बाई साहब सविता आंबेडकर ने तत्कालीन राष्ट्रपति द्वारा स्वीकार किया।

डॉ. बाबा साहब की विचारधारा से प्रेरणा लेकर हजारों गीत लिखे गये। किताब, कैसेट, सीडी, विडियो बने और उनके विचारों का अलौकिक संघर्षमयी जीवन का प्रचार-प्रसार बड़े पैमाने पर किया गया। भारत में डॉ. आंबेडकर जी का दलित, पिड़ित, वंचित, शोषितों के उद्धार का कार्य प्रारम्भ हुआ। उसी दौरान महानर, मांग, मातंग, भंगा, चमार आदि अस्पृश्य जातियों के लोगों ने उनके आंदोलन में पूर्ण श्रद्धा और लगन से हिस्सा लिया। इस कार्य में उन्हें बुद्धिवादी, समतावादी ब्राह्मण-ब्राह्मणेतरों ने भी साथ दिया। छत्रपति शाहू महाराज का योगदान भी महात्वपूर्ण है। इस अशिक्षित, दीन-हीन समाज की अज्ञानी जनता स्त्री-पुरूष डॉ. आंबेडकर को अपना मसीहा, मुक्तिदाता, उद्धारकर्ता, मार्गदाता, भीमराया, राजा, भगवान, श्रेष्ठतम, पिता, भीमाई, माता, सखा, बंधु, मार्गदर्शक आदि विशेषणों द्वारा असीम श्रद्धा से नमन करते हैं। उनके कार्य कर्तव्य तथा सिद्धांतों से प्रभावित होकर ही गीतों के माध्यम से उनका स्मरण करते थे और अब भी करते हैं। विद्वान पाठकों को यह ज्ञात अवश्य होगा कि बाबा साहब डॉ. आंबेडकर ने जन सरोकारों का एक गीत सुनकर उनके अनेकों भाषणों से भी ज्यादा प्रभावशाली होता है, इस आशय के विचार व्यक्त किए थे। नाथगाँव की सभा में महाकवि वामन दादा कर्डक जी ने एक गीत गाया था। वह गीत सुनकर बाबा साहब ने खुश

होकर उनकी पीठ थपथपायी और कहा कि बहुत अच्छा गाया, ऐसे ही गाते जा उस वक्त वामनदादा को मिली प्रोत्साहन की ऊर्जा तथा प्रेरणा वे जिंदगी भर नहीं भूले।

ऐसे ही सैकड़ों लोक-गीतकार बाबा साहब के विचारों से प्रेरित होकर लिखने लगे। गायक उन्हें संगीत में ढाल कर गाने लगे। उन्होंने गाँव शहरों में भजन, वग, प्रहसन, कष्णाली, गीत, अभंग, पवाड़े, जलसा, शाहिरी, कविता, मुक्त छंद, खण्डकाव्य, दोहा, गज़ल आदि पद्य रचनाओं के माध्यम से डॉ. आंबेडकर की क्रांतिकारी वैचारिकी का महाराष्ट्र में ही नहीं, देश के अन्य प्रांतों में मराठी, हिंदी आदि भाषाओं में प्रमुखता से प्रस्तुत कर प्रचार-प्रसार किया। गीतों की किताबें प्रकाशित हुई।

इस महत्वपूर्ण कार्य में प्रमुखता से महाराष्ट्र में मराठी भाषी शरीर के रूजी गायकवाड, भीमराव कर्डक, वामेन दादा कर्डक, बालू-कालू, नागोराव पाटणकर, गोविंद म्हशीलकर, छोटे बाबू कव्वाले, बी. काशीनंद, रोशनबाबू कव्वाल, विठल उमप, उत्तममुले, किरण पाटणकर, प्रकाश पाटणकर, रंगराज लांजेवार, गजानंद गडपायले, कृष्णा शिंदे, आनंद शिंदे, सुरेश भट, डॉ. अनिल खोब्रागडे, लक्ष्मण राजगुरू, प्रा. हृदय चक्रधर, भीमराव बनसोड, डॉ. अनिल सूर्या, डॉ. मच्छिद्र चोरमारे, भाऊ पंचभाई, भीमराव गणवीर आदि उल्लेख करना चाहुँगा। जिससे आंबेडकरी विचार धारा के प्रचार-प्रसार में उनकी प्रतिभा से हम परिचित हो सकेंगे। क्योंकि कवि, गायक, गीतकार एवं संगीतकारों ने अपनी कला का जौहर प्रदर्शित किया है।

महाकवि वामनदादा कर्डक जी ने अपने गीतों में डॉ. आंबेडकर के संदेश प्रस्तुत किए हैं। डॉ. आंबेडकर जी के जन्म लेने से करोड़ों लोगों का उद्धार हुआ है ऐसा कहते हैं-

उद्धरली कोटी कुले, भीमा तुइया जन्मामुले।
झाले गुलाम मोकले, भीमा तुइया जन्मामुले।।

भावार्थ-

उद्धार हुआ करोड़ों वंशो का, भीम तेरे जन्म से।
हुए गुलाम आजाद, भीम तेरे जन्म से।।

सारी दबी कुचली मानवजाति के उत्थान के लिए विश्वरत्न डॉ. आंबेडकर ने अपना जीवन कुर्बान किया। इसको सरल शब्दों में वामन दादा अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं -

जिवाला जिवाचं दान, भाइया भिमान केलं।
झिजून जिवाचं रान, भाइया भिमान केलं।।

भावार्थ-

जनि को देकर जान, मेरे भीम ने किया।
परिश्रम से जान कुर्बान, मेरे भीम ने किया।।

उसी तरह कर्डक जी का बहुत मशहूर गीत है, जिसमें वे तूफानों से कभी न घबराने का सबक देते हैं-

तुफानाले से दिवे आम्ही, तुफानातले दिवे।
वादलवारा पाऊसधारा मुला न आम्हा शिवे....

भावार्थ-

तूफानों के दीए हम, तुफानों के दीए।
गर्जे बादल हो बारिश, कभी भी हमें न छूए।।

हर मानव के प्रति प्यार और बंधुता वृद्धिंगत हो, कभी धर्म के नाम पर अन्याय न करें। प्रज्ञा, करुणाशील को जीवन में उतारे। कवि उत्तम मुले के इस गीत पर ध्यान दें-

मानवता के हक दिलवाकर जीवन का जो दान दिया।

दीक्षा देकर भीम ने हमको मुक्ति का वरदान दिया।।

कवि लक्ष्मण राजगुरु भी बाबा को नमन करते है-

गरीबा मंदी गरीब घरचा, जन्मला एक हीरा।
नाम तयाचे तुला सांगतो, ऐकून घे शाहीरा।।
अता होणार नाही कुणी, असा झालाच नाही
कुणी दीनाचा धनी जो।

भावार्थ-

गरीबों से ही गरीब घर में, पैदा हुआ एक हीरा।
नाम जिसका तुम्हे बताऊँ, सुन ले शाहीरा।।
ऐसा होगा नहीं कोई, ऐसा हुआ ही नहीं कोई
दीनों का मालिक जी।।

मनुस्मृति का जाहीर दहन करके बाबा साहब ने जातीय व्यवस्था का निषेध किया और पुराण मतवादियों की नींद हराम कर दी। उसी प्रसंग को कवि राजानंद गडपायले अपने गीत में बड़े अच्छे अंदाज में पेश करते है-

माणूस म्हणुनी जगव्यासाठी दिला भीमा ने लढा।
नीच नीतीच्या मनुस्मृतीला पेटवीले धडधडा।।

भावार्थ-

इंसान कहकर जीने के लिए भीम ने दिया ज्ञान।
नीच रिवाजों की मनुस्मृति को जलाया सरेआम।।

डॉ. आंबेडकर ने मानव को अपनी उन्नति स्वयं करने के लिए सही रास्ता दिखाया। अत्त दीपो भव। उस पर निष्ठा से एक होकर चलना चाहिए। आहीर विठ्ठल उमप कहते हैं -

भीम ज्ञान पावलांची धरूचलावाट।
वाट जीवनाची आपली खरी वाट।।
हे रान बाभण्डीचे पिढीजात जागोजागी।
तुडवीत जाऊ आम्ही या वादब्डाची वाट।।

भावार्थ-

भीम ज्ञान के कदमों का हम चले रस्ता।
मार्ग यह जीवन का अपना सच्चा रस्ता।।
यह जंगल बबूल का पीढ़ियों से चहुँ ओर
रौंदते चले हम इन तूफानों का रस्ता।

बाबा साहब सारी उत्पीड़ित मानवता की त्रासदी को नष्ट करना चाहते थे। दीन-हीन गुलाम स्त्री-पुरूषों के लिए वे नयी खुशहाल जिंदगी बहाल करने वाले निर्माता लगते हैं, यह आशय विठ्ठल उमप यहाँ बताते हैं -

गोर गरीबाचा भीम दाता भेटला।
आम्हा जीवाचा उद्‌गाता भेटला।।
हयातील भाइया असा नहीं गवसला।
नव्या जीवनाचा निर्माता भेटला।।

भावार्थ-

दीन-गरीबों का भीमदाता मिला।
हमें प्राणों का उद्‌गाता मिला।।
मेरी जिंदगी में ऐसा नहीं मिला।
नए जीवन का निर्माता मिला।।

भूख, गरीबी, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ सम्यक परिवर्तन की लड़ाई संसदीय मार्ग से लड़ने का जज्बा बाबा साहब ने हमें सिखाया। इसके लिए हमें निरंतर चौकन्ना और सजग रहना होगा। अहीर अठ्ठाभाऊ साठे का गीत यही कहता है-

जग बदल धालूनी घाव।
सांगून गेले मला भीमराव।।

भावार्थ-

दुनिया बदल करके प्रहार।
बताकर गए मुझे भीमराव।।

उनकी एक और कविता की पंक्तियाँ पूँजीवादियों से सवाल करती है-

सांगा आम्हाला बिर्ला, बाटा-टाटा कुठाय हो?
सांगा धनाचासाठा, आमचावाटा कुठाय हो?

भावार्थ-

बताओ हमें बिर्ला-बाटा-टाटा कहाँ है जी?
बताओ हमें धन का गोदाम, हमारा हिस्सा कहाँ है जी?

सुप्रसिद्ध मराठी ग़ज़लकार सुरेश भटजी ने तथागत बुद्ध तथा डॉ. बाबा साहब आंबेडकर को अपना श्रद्धास्थान कहा था। उनकी अभिवादन स्वरूप निम्न पंक्तियाँ-

भीमराया घेतूस्या या लेकरांची वंदना।
आज घेओथंबलेल्या अंतरांची वंदना।।

भावार्थ-

भीमराया स्वीकारो तेरे इन पुत्रों की वंदना।
आज स्वीकारो अनुग्रहीत मनों की वंदना।।

तथागत बुद्ध के धम्म मार्ग पर सभी भारतीयों को चलने की प्रेरणा डॉ. आंबेडकर की बुद्ध धम्म दीक्षा से प्राप्त हुई है। तथागत के धम्मचक्र को उन्होंने तीव्र गति प्रदान की। इस गीत में तथागत को नमन करते सुरेश भट कहते हैं-

तुझाच गौतमा पडे प्रकाश अंतरी।
तुझेच धम्मचक्र हे फिरे जगावरी।।

भावार्थ-

तेरा ही गौतम उजाला होता मन में।
तेरा ही धम्मचक्र यह घूमता जगत में।।

संविधान निर्माण में डॉ. आंबेडकर ने अथक परिश्रम किया। उन्हें देश ने ही नहीं, सारी दुनिया ने श्रेष्ठतम विद्वान से गौरवान्वित किया। कवि रंगराज लांजेवार का लिखा गीत डॉ. अनिल कुमार खोब्रागडेजी ने गाकर उसके आशय को ऊँचाई पर पहुँचाया है-

भारतीय घटनेचा तू शिल्पकार आहे।
सुगंन्ध परिसव किर्ती दिगंतात वाहे।।

भावार्थ-

भारत के संविधान के आप शिल्पकार हैं।
खुशबू की तरह आपकी कीर्ति दसों दिशा में है।।

इस संदर्भ में कुछ और गीतों का उल्लेख करना मैं जरूरी समझता हूँ। कुछ युवा गीतकार एवं कवियों की रचनाएँ भावार्थ के साथ प्रस्तुत हैं-

डॉ. मच्छिंद्र चोरमारे की रचना बाबा साहब को संबोधित करती है-

तुम्ही त्रिशरणाची उद्घोषणा केली।
तुम्हीच बावीस प्रतिज्ञांची बखर दिली।।
तुम्हीच लावली जगव्याला धम्माची चाल।
तुम्हीच दिली चलुक की साठी संघर्षाची ढाल।।

भावार्थ-

आपने ही त्रिशरणों को उद्घोषित किया।
आपने ही बाईस प्रतिज्ञाओ का अभिलेख दिया।।
आपने ही जिंदगी को धम्म से जीना सिखाया।
आपने ही आंदोलन को संघर्ष का कवच दिया।।

डॉ. आंबेडकर के कारण हममें क्या परिवर्तन हुआ, यह प्रतिपादित करते हैं कवि भाई पंचभाई-

भीमामुबे जाण्डले जातीच्या ज्वाल्डा।

आयल्या बाण्डांना, सांगा तुम्ही।।

भीमामुले आम्ही लावले सुरूंग

जीलीवादी रंग, नष्ट केले।।

भावार्थ-

भीम के कारण बुझायी, जातियों की ज्वाला

अपने बच्चों को, बताओ तुम।

भीम के कारण हमने बोयी है सुरंगे

जातिवादी रंग-ढंग ध्वस्त किये।।

भीम बाबा के जन्म से सुबह की रोशनी प्राप्त हुई, इसका आगाज करते डॉ. अनिल सूर्या लोगों को दूर नहीं रहने का आवाहन करते हैं -

झाली पहाट झाली लू दूर दूर कारे?

आरेअजून जागी तू दूर दूर कारे?

भावार्थ-

हुई प्रातः हुई तू दूर-दूर क्यों है?

है अब भी जागृत, तू दूर दूर क्यों हैं?

ग़ज़लकार प्रा. हृदय चक्रधर अपने गीत द्वारा जयभीम गान को स्वर प्रदान करते हैं-

निली पाखरे दीक्षा भूमी ची जयभीम जयभीम वाणी गाती।

धम्म स्वरांच्या अनुरागा ने नव्या दिशेचे चिंतन करती।।

भावार्थ-

नीले पंक्षी दीक्षाभूमि के जयभीम गीत-गाते।

धम्मस्वरों के अनुराग से नयी दिशा का चिंतन करते।

संविधान का महत्व विशद करते भीमराव गणवीर की कुछ काव्य पंक्तियॉ-

माणसांना माणसाची आण देते संविधान।

लोडलेल्या श्रृंखलांचे पंख होते संविधान।।

स्त्री मुलांनाशोषतांना ज्ञान ऊर्जा मिष्ठत आहे

ही सुरक्षा दुःखितांची खान बनते संविधान।।

भावार्थ-

इंसान को इंसानियत की कसम देता संविधान।

टूटी हुई बेड़ियों का पंख होता संविधान।।

स्त्री-बच्चे शोषितों को ज्ञानऊर्जा मिल रही है।

यह सुरक्षा दुःखीजनों की खदान बनता संविधान।।

निष्कर्ष रूप में आंबेडकरी विचारधारा में इन गीतों का महत्वपूर्ण योगदान भलीभांति स्पष्ट होता है। आज देश का माहौल बहुत ही शोचनीय और संक्रमण की अवस्था से गुजर रहा है। गरीब, दलित, आदिवासी, पिछड़े, अल्पसंख्यक स्त्री-पुरूषों को तथाकथित विकास का सब्जबाग दिखाकर सत्तारूढ़ पक्ष बहुमत के आधार पर संविधान बदलने और हिंदूराष्ट्र घोषित करने की कोशिश कर रहा है। बेरोजगारी, महंगाई, नोटबंदी, जी.एस.टी., महामारी, सरकारी उपक्रमों की बिक्री से जनता बेहद परेशान है तथा देश में ब्याज, अराजकता, लूटपाट, भ्रष्टाचार का अघोषित आपातकाल का पुरजोर विरोध करने के कार्य में लिप्त होने का संकल्प हमें लेना चाहिए। तदर्थ हमें तथागत बुद्ध, संत कबीर, संत रविदास, शिवाजी महाराज, ज्योतिराव फुले, सावित्रीबाई फुले, छत्रपति शाहू महाराज, नारायण गुरू, संत गाडगे महाराज, रामास्वामी नायकर तथा डॉ. बाबा साहब आंबेडकर के सपनों का भारत निर्मित करने में संगठित होकर भरसक प्रयास करना जरूरी है।

जय भीम-जय भारत।

गीतकार एवं गीत

सूरजमल सितम

जन्मतिथि	:	10 फरवरी 1949
पिता	:	परिनि. बालकिशन मुंशी जी
माता	:	परिनि. स्वरूपी देवी
शिक्षा	:	एम.ए., पीएच.डी., एल.ए.एम.एस.
प्रकाशित रचनाएँ	:	हास्य-व्यंग्य एवं वीर रस। गद्य तार्किक लेखन। करीब 45 पुस्तकें प्रकाशित।
समाजसेवा	:	सन् 1976 से अब तक।
सम्मान	:	अनेक सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं/संगठनों द्वारा सम्मानित।
संप्रति	:	व्यापार कर अधिकारी, उत्तर प्रदेश सरकार से सेवानिवृत्त।
पता	:	229, जटवाड़ा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश - 221002

(1)

मेरी बहना। जाने है जिनको कुल जहाँ... आ... न.।
ऐसी बहना। जिन्हे जगतकुल जाने।
एशिया दीपक मानें।
दिये थे जो दुनिया ने। सुनो सुनाएं बुद्ध के नाम री...

महामाया नन्दन कहते कि महामाया के लाला।
ऐसे हु गौतम कहे, गौतमी प्रजापति ने ही पाला।
सुगति पा सुगति सिखाए नाम सुगत कह डाला।
बाला। बोलेंती बुद्धबिहारी। हितकारी मंगलकारी।
मंगल किए हर धाम री...

रंजो गम से सदा दूर रहे कहैं ऐसे नाथ निरंजन।
बहु जनों के दुख हरने से नाम हुया दुख भंजन।
शील विनय से हुए विनायक सुद्दोदन के नन्दन।
दुर्जन। भटके को रस्ते लाए। ऐसे सारथि कहाए।
शास्ता कहे आवाम री...

मौन किया मन रुपी इद्र को यूं ही मुनिद्र कहाए।
मार झुंड को पराजित किया मार जित पद पाए।
महाकारुणिक कहे दुखी जनपै करुणा बरसाए।
आए। जैसे हु बुद्ध तथ्य पै। ऐसे हि धाए तथ्य पै।
पड़ा तथागतु नाम री....

अनुत्तरो यूं कहलाए किए निर उत्तर नर नारी।
सिंह चाल से नर सिहों कहे धम्म से धम्मा चारी।
अंबुज सम रहे जगत कींच में पुंडरीक पदधारी।
हां री। पुरुषों में उत्तम रहे। ऐसे पुरुषोत्तम कहे।
सितम नमें सुबह याम री....

(2)

लंबे अरसे बाद में वापस मिल रही है कलम।
बहुजनके घाव पर मरहम मल रही कलम।

अरसे पहले बहुजनों को किया कलम वंचित
बिसरे हुते लम्हों को यह अब कर रही संचित
विषमवाद के गल में उल्टी घल रही यह कलम।

सहस्त्र कटारों से भी ज्यादा ये क्षमता रखती।
मची क्रांति सदा इसी से तवारीख लिखती।
यह क्रांति देख के खल को खल रही यह कलम।

ये दूध सिंहनी का उगले जो इसको पीलेगा।
अत्याचार खिलाफ समर में वो ही दहाड़ेगा।
इंसानियत के शत्रु दल को दल रही यह कलम।

पड़ै देश पै विपत कलम के रुख को मोड़ेंगे।
निज मुद्दों को भूल देश हित इसको जोड़ेंगे।
वतन प्रेम में सितम फुलती फलती यह कलम।

(3)

बाबा ने हम क्या से क्या कर दिये।
सदियों के मुरूदो में प्राणों भर दिये।

कुचले हुये हम जमीन पै पड़े थे।
बाबा ने आकर खड़े हम करै थे।
गगन चूमते हैं हमको ऐसे पर दिये।

आंखों से झर झर झरने ढलै थे।
कान थे बहरे औ होठ भी सिले थे।
मंच पै गरजते ऐ निडर कर दिये।

जिसने यहां पै उत्पात मचाया।
भीम ने उन्हें ऊंगली पै नचाया।
अभिमानियों के मुंह बंद कर दिये।

राज बने था यहां रानी का बेटा।
भीम ने बनाया मैतरानी का बेटा।
वोट का हकूक देकर बराबर किये।

सदियों के बाद आया टैम सुनहरा।
शीश पै हमारे बंधा शक्ति का सहरा।
समाज में ऐसे ऐसे सितमगर दिये।

डॉ. धर्मपाल बौद्ध

पिता का नाम : बनवारी लाल
जन्मतिथि : 20 अगस्त 1953
जन्म स्थान : हैदराबाद, तेलंगाना राज्य
शिक्षा : बीएससी, एमए (हिन्दी), एमफिल (हिंदी), पीएचडी (हिन्दी)
अध्यापन अनुभव : 32 वर्ष, 1981 से 2013 तक।
पद : पूर्व अध्यक्ष, कला संकाय, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (सेवानिवृत्त)
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद
पूर्व अध्यक्ष, अध्ययन बोर्ड, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
पूर्व एनएसएस प्रोग्राम अधिकारी, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
पूर्व सलाहकार, प्रतिभा, हिन्दी साहित्य समिति, हिन्दी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद।
पूर्व समन्यवक, स्नातक स्तर

		हिन्दी पाठ्यक्रम समिति, आंध्र प्रदेश स्टेट कौंसिल आफ हायर एजुकेशन, हैदराबाद
विशेष व्याख्यान	:	600 से ज्यादा, विभिन्न विश वविद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्थाओं आदि में।
सम्मेलन संगोष्ठी	:	100 से अधिक कार्यशाला आदि में।
सम्मेलन संगोष्ठी	:	100 से अधिक कार्यशाला आदि।
प्रकाशन	:	3 पुस्तकें- धूमिल के काव्य का सामाजिक संदर्भ, साठोत्तरी हिंदी कविता समाजशास्त्रीय अध्ययन, समता काव्य संकलन संपादित।
विशेष रूचि	:	कवि, समीक्षक, गायक, सामाजिक कार्यकर्ता।
सम्मान	:	बैस्ट टीचर अवार्ड, रोटरी क्लब, निजामाबाद डॉ. अंबेडकर विशिष्ट सेवा पुरस्कार, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली शांति चक्र इंटरनेशनल सम्मान, हैदराबाद,
मोबाइल	:	9247486278

(1)

तू बुद्ध की राह पे चल

तू बुद्ध की राह पे चल, सफल होगा तू इसे पाकर
मिट जाएंगे दुख सारे, मिलेगा सच्चा सुख सागर
तू बुद्ध की राह पे चल
काम क्रोध मद मोह लोभ का फैला जाल यहाँ
कर विपश्यना पा छुटकारा हो मन निर्मल अपना
खुशी से भर जीवन अपना।

चारों ओर हैं झगड़े लड़ाई सब में तना तनी
बुद्ध की राह है ऐसी भाई जिसमें हिंसा नहीं
सबसे मिलजुल के रह
मैत्री अपने मन में लाकर
तू बुद्ध की राह पे चल।

झूठ व्यभिचार चोरी हिंसा मादक द्रव्य दफना
समता ममता और बंधुता जीवन में अपना
जग में कर सबका भला
करूणा को मन में जगाकर।

तू बुद्ध की राह पे चल, सफल होगा तू इसे पाकर
मिट जाएंगे दुख सारे, मिलेगा सच्चा सुख सागर
तू बुद्ध की राह पे चल तू बुद्ध की राह पे चल
तू बुद्ध की राह पे चल तू बुद्ध की राह पे चल।

(2)

मेरे प्यारे भारत कब तू सुधरेगा

मेरे प्यारे भारत कब तू सुधरेगा
अपनी पुरानी शान कब तू पाएगा
मेरे प्यारे भारत .....

दलितों पर अत्याचार हैं होते
कर्ज से कितने किसान हैं मरते
खाने को यहाँ रोटी नहीं है
लोगों को रोजगार नहीं हैं
भूखे पेट तू कब तक हमें सुलाएगा

अपनी पुरानी शान कब तू पाएगा
मेरे प्यारे भारत .....

नारी की यहाँ इज्जत लुटती
अफसरों में रिश्वत घुटती
बुद्धिजीवी यहाँ बिकते हैं
नेता अपने घर भरते हैं

समता बंधुता न्याय तू कैसे लाएगा
अपनी पुरानी शान कब तू पाएगा
मेरे प्यारे भारत कब तू सुधरेगा
अपनी पुरानी शान कब तू पाएगा
मेरे प्यारे भारत .....

कहने को आजाद हैं हम सब
सदियों से पीड़ित हैं बहुजन
अपने घर में हुए पराए
मनुवाद के सब हैं सताए
बुद्ध का पथ ही अब तो पार लगाएगा
अपनी पुरानी शान कब तू पाएगा
मेरे प्यारे भारत .....।

(3)

आंबेडकर तुम्हें प्यार करते रहेंगे

आंबेडकर तुम्हें प्यार करते रहेंगे
तेरे ही विचार पे चलते रहेंगे
सांसों में समाया तुमको
दिलों में बसाया तुमको
तेरे ही मिशन पे करेंगे अर्पण जीवन
आंबेडकर तुम्हें प्यार .....

तुमने ही हमको जीना सिखाया
दोषपूर्ण जीवन को शुद्ध बनाया
हिंदू धर्म को छुड़वाया
बौद्ध धर्म को अपनाया
सच्चे मानव में हमको दिया बदल
आंबेडकर तुम्हें प्यार .....

तुमने ही हाथों से झाड़ू छुड़ाया
बदले में इसके कमल थमाया
शिक्षा का पाठ पढ़ाया
संगठित होना सिखाया
गुलामी की जंजीर तोड़ी संघर्ष कर
आंबेडकर तुम्हें प्यार .....

जिस दिन तुमको भूलेंगे हम
उस दिन से अपना होगा शुरू पतन
भूलेंगे ना तुम्हें जीवन भर
भटकेंगे ना तेरी राह से हम
तुमसे ही होता अपना मंगल जीवन
आंबेडकर तुम्हें प्यार .....।

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका की ओर से बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस (06 दिसम्बर) पर उन्हें शत्-शत् नमन।

सुखबीर सिंह बौद्ध

पिता का नाम : श्रद्धेय रामशरण सिंह

माता का नाम : श्रद्धेया रामकली

जन्मतिथि : 30 मई 1961

जन्म स्थान : गोविंदपुर शंकरपुर, महलवाला, मेरठ (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : हाई स्कूल

प्राचीन व्यवसाय : घड़ी साजी शिल्प, 1978 से 2010 तक

धम्म प्रचार : बुद्ध भीम मिशन के गीत लिखकर बौद्ध धम्म का प्रचार।

काव्यगुरु : प्रसिद्ध साहित्यकार गुरु बुद्धसंघ प्रेमी जी, न्यू सीलमपुर (दिल्ली)

दीक्षा शगुरु : परम श्रद्धेय लामा लोब जंग, लद्दाख के द्वारा 14 अक्टूबर सन् 1990

सांस्कृतिक मंत्री : भारतीय बौद्ध महासभा, उत्तर प्रदेश आजीवन सदस्य।

पुरस्कार/सम्मान : सन् 1990 में डॉ. आंबेडकर उत्थान समिति मेरठ द्वारा सम्मानित। सन् 1994 में शेरगढ़ी कांड की ऑडियो रचना करने पर सम्मान। सन् 1995 में भारतीय बौद्ध महासभा उत्तर प्रदेश द्वारा लखनऊ सम्मेलन में सम्मान। सन् 2008 में बुद्ध धम्म सेमिनार में आंबेडकर भवन, दिल्ली से अशोक अवार्ड से सम्मानित।

वर्तमान पता : पंचशील निवास, 141 मुहल्ला- खिारनी, अब्दुल्लापुर, जिला- मेरठ, उत्तर प्रदेश- 250001

(1)

बौद्ध धर्म की बाहर जय-जयकार है
भारत से शुरू हुआ माने संसार है

छुआछूत का भेद नहीं है मानव को प्यारा
मतलब ना ऊँच-नीच का गौतम ने किया इशारा
इसलिए जग सारा भूले ना उपकार है
भारत से शुरू हुआ .....

सुनीत भंगी, नाई उपाली को बुद्ध ने दीक्षा दी थी
धम्म सबके लिए बराबर उन्होंने बात कही थी
बुद्ध की वो बात सही थी, माने नर-नार है
भारत से शुरू हुआ .....

क्या राजा क्या प्रजा, उपदेश सुने नर-नारी
जो भी कहते थे गौतम, मानी थी जनता सारी
ज्ञान के थे भंडारी धम्म का जो सार है
भारत से शुरू हुआ .....

गुरु प्रेमी ने समझाया बिन धर्म मनुष्य है खाली
सुखबीर दे गये बगीचा सीचों बन करके माली
सूख न जाए डाली मेहनत बरकरार है
भारत से शुरू हुआ .....।

(2)

भूली राह दिखाय गयो रे
भीमाबाई का ललना।

अपने समय में झेली मुसीबत
हमें आजाद कराय गयो रे
भीमाबाई का ललना।

आप रहो पानी को तरसता
हम सबको साथ मिलाय गयो रे
भीमाबाई का ललना।

हमसे सब करते थे घृणा
आपस में प्यार कराय गयो रे
भीमाबाई का ललना।

कहे सुखबीर झूठ मत जानो
संसद तक प्रेमी पहुँचाय गयो रे
भीमाबाई का ललना।

(3)

बाबा की वाणी से नैया पार है
ना मानो तो नैया मँझधार है

सदियों से भूला रास्ता बताया था
रास्ता बताकर फिर समझाया था
उस पर चलना हमारा वचन-सार है
ना मानो तो नैया .....

शिक्षित बनना उनका पहला नारा है
संगठित होना दूजा काम हमारा है
संगठित ना हो पाए, तो हमारी हार है
ना मानो तो नैया .....

निद्रा छाई आज आँखें खोलो तुम
एकता का नारा मुख से बोलो तुम
कसम उठा लो आज यही इकरार है
ना मानो तो नैया .....

जन्म दोबारा प्रेमी नहीं आएगा
भीम की बातें नहीं मानी, तो पछताएगा
सुखबीर बौद्ध करते प्रचार हैं
ना मानो तो नैया .....।

Guru Ravidas DJ Song Hindi संतों में संत रविदास जी *Singer - Pappu Ra...*
1K views · 1 year ago

Ravidas Song Bhojpuri काहें रविदास जी के बाँटला 🎤स्वर. आराधना बौद्ध व ...
1K views · 1 year ago

Buddh Dhamma Sangh Ki Mahima ¤ बुद्ध गीत *Ye Buddha Ki Zamin ...*
459 views · 1 year ago

https://youtube.com/c/AMBEDKARVADISAHITYA

भूपसिंह भारती

पिता का नाम	:	जयनारायण बल्ड़ोदिया
माता का नाम	:	किस्तूरी देवी
जन्मतिथि	:	15-03-1966
जन्म स्थान	:	गाँव- खालेटा, जिला-रेवाड़ी, हरियाणा
शिक्षा	:	एम.ए. (हिंदी, राजनीति शास्त्र), बी.एड., एम फिल लिखे गये, रिकॉर्ड किये गये
गीतों के नाम	:	दस गीत प्रेषित है।
पेशा/व्यवसाय	:	अध्यापन (हरियाणा शिक्षा विभाग में शिक्षक)
पत्रकार का पता	:	आदर्श नगर, नारनौल, हरियाणा।
मोबाइल नंबर	:	9416237425
ईमेल	:	bsbharti786@gmail.com

(1)

जायो जायो री सखी भीमा जायो री।
लालो आयो री सखी लालो आयो री।

दाई बैठक के म्हा आई दौड़ी दौड़ी जी
माई जायो लालो लालो मूछ मरोड़ी जी,
राजी राजी दादा जी नेग म्हारो लाओ री।

भाजी भाजी भुवाजी बजाई थाली जी
या बड़ भागा तै आई खुशी निराली जी
यो कुनबों हो रो राजी रंग छायो री।

गोदी म्ह ले लाल प्यार तै निहारो जी,
सोच समझ कै नाम भीम पुकारों जी,
दे किलकारी फेर भीम मुस्कायो री।

लाड़ चाव तै खूब छठी मनाई जी,
सूबेदार नै फेर छावनी जिमाई जी,
नटखट बालक भीम पढण बिठायो री।

बैठै सबतै दूर कोई ना बोलै जी,
जात पात को भेद काळजो छोलै जी,
फेर बी देखो भीम नहीं घबरायो री।

करकै दसवीं भीम कोलिज म्ह चालो जी,
देख देश हुयो राजी रामजी मालो जी,
म्हारो लालो बी ए पास करकै आयो री।

छुआछूत के बोल जिगर के म्ह रड़कै जी,
डॉक्टर बणगा भीम विदेश म्ह पढ़कै जी,
पढ़ी पढ़ाई खूब इलाज फेर पायो री।

गुलामी की जंजीर तोड़ बगाई जी,
अबला नारी देखो सबला बनाई जी,
भीमराव नै गजब संविधान बणायो री।

भेदभाव नै मेट समानता लाया जी
भाईचारा न्याय प्रेम फैलाया जी,
संविधान को राज भीम जी लायो री।

(2)

मेरे भीमराव ने भारत का सुंदर संविधान बनाया है।
हर शब्द वाक्य हर पन्ने में समता का भाव समाया है।।
इस भेदभाव के विष को हम सदियों से ही पीते आये,
पशुओं से भी गन्दा जीवन ये शोषित जन जीते आये,
भीमराव ने हम सबको जीने का सलीका सिखाया है।

जल जंगल जमीन छीन दलितों पर खूब जुल्म ढाये,
गांव नगर से दूर रहे और कदम कदम धक्के खाये,
इस छुवाछूत की बिमारी को बाबा ने ही मिटाया है।

शिक्षा सम्पत्ति छीनी और हक हकूक छीने सारे,
गळ में हांडी कड़ में झाड़ू ये लिए फिरे मारे मारे,
पढ़ने लिखने का हक इनको साहेब ने ही दिलवाया है।

सब ऊँच नीच मिटाकर सब मानव एक समान किये,
समता स्वतंत्रता न्याय प्रेम के काम भीम महान किये,
कहे भारती ये भाईचारा भीमराव ने बनाया है।

(3)

यदि पढ़ोगे, आगे बढ़ोगे,
बड़े काम की पढ़ाई, कहे माँ सावित्रीबाई।
पढ़ने में ही छिपी भलाई, सोच समझ मेरे भाई,
कहे माँ सावित्री बाई।

अनपढ़ का जग में, पग पग पै अपमान हो।
पढ़े लिखे का ही, मनचाहा सम्मान हो।
पढ़ो पढ़ाई, हुवै बड़ाई, बढ़जा थारी कमाई।
कहे माँ सावित्रीबाई।।

वर्ण व्यवस्था ने, जाल कमाल बिछाया सै।
स्वर्ण को ऊँचा, शुद्र को नीच बताया सै।
जाल बिछाया, तुझे फंसाया, फंसा तू उसमें भाई।
कहे माँ सावित्रीबाई।।

जल जंगल जमीन, अधिकार हमारे छीने।
बण के गुलाम इनका, खूब बहाये पसीने।
हुई बदनामी, करी गुलामी, ना तेरी पार बसाई।
कहे माँ सावित्रीबाई।।

अनपढ़ता को मिटाओ, ज्योतिबा न्यू बोले।
सभको पढ़ाणे खातर, स्कूल देस म्ह खोले।
बोल पिचासी, जय मूल निवासी, शिक्षा की राह दिखाई।
कहे माँ सावित्रीबाई।।

(4)

संविधान गीत

बाइबल, गुरुबाणी से, ना गीता-कुरान से।
भीम संविधान से चलता, देश ये शान से। टेक।
आज भीम के संविधान ने, छुआछुत मिटाई।
ऊंच-नीच मिटा करके, समता की राह दिखाई।
जीना सिखलाये सबको, ये स्वाभिमान से।
भीम संविधान से चलता, देश ये शान से ।1।

सबसे न्यारा सबसे प्यारा, ये संविधान हमारा।
सबका रखे ध्यान, बणा ये अभिमान हमारा।
करता रखवाली सबकी, ये बड़े ध्यान से।
भीम संविधान से चलता, देश ये शान से ।2।

जनता में निहित सत्ता, ये मताधिकार दिलाये।
शुद्र, शोषित, नारी को, सब अधिकार दिलाये।

अब ना कोई जीयेगा, देखो अपमान से।
भीम संविधान से चलता, देश ये शान से ।3।
समता और आजादी लाया, संविधान हमारा।
सामाजिक न्याय दिलाकर, लाया भाईचारा।
संविधान वन्दना गाये, 'भारती' गुमान से।
भीम संविधान से चलता, देश ये शान से ।4।

(5)

जन जागरण गीत

जागो जनता जागो इब क्यूँ सो री रै।
देखो सारै जय भीम की होरी रै।।

बिना पढ़ाई ना बढ़ै कमाई या साच्ची बात बताई,
सुणो बात घणी करामात बस शिक्षा म्हं ही पाई,
यो पढ़णा लिखणा भोत जरूरी गोरी रै।
देखो सारै जय भीम की होरी रै।।

बेकार अड़े आपस म्हे लड़े और पड़े रहे लाचारी म्हं,
धन माया सख की छाया ना मिली हमें नादारी म्हं।
आज भी बेकारी म्हं तू क्यूँ जीवन नै खो री रै।
देखो सारै जय भीम की होरी रै।।

इब सुणो बात ना करो घात मन तै सारे नेक बणो
करणा सै संघर्ष बड़ा तो आपस म्हं सारे एक बणो,
मान भीम की बात खामखा क्यांतै थूक बिलोरी रै।
देखो सारै जय भीम की होरी रै।।

देण नई आस गुरु रविदास नै फेर बेगमपुरा बसाये,
जन जन की पीर मेटण कबीर इस दुनिया म्हं आये,
कहै भारती सारी बेड़ी फेर भीम नै तोड़ी रै।
देखो सारै जय भीम की होरी रै।।

(6)

सबको अपना बनाते रहिये।
गीत भीम के गाते रहिये।।

प्रेमभाव से सबसे मिलना,
ताव कभी ना खाते रहिये।

शिक्षित बनो के नारे को,
जन-जन में फैलाते रहिये।

संगठन में सबका भला है,
यह सबको बतलाते रहिये।

संघर्ष सफलता का मंत्र है,
मन्त्र को आजमाते रहिये।

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई,
सबको गले लगाते रहिये।

पट जाए नफरत की खाई,
भाईचारा बढ़ाते रहिये।

भीमराव के पदचिन्हों पर,
चलते और चलाते रहिये।

प्रबुद्ध नारायण बौद्ध

जन्मतिथि : 15-04-1966

जन्म स्थान : ग्राम- नोनार, पोस्ट- तुलसी आश्रम, जिला- चंदौली उत्तर प्रदेश- 232108

उपाधि : शास्त्री और आचार्य उपाधि से सम्मानित।

शिक्षा : बी.ए., एम.ए. (संस्कृत)

मोबाइल नंबर : 9005441713

(1)

जय बुद्ध जय भीम गाते चलो
धम्म की ज्योति जलाते चलो
पंचशील झंडा लहराते चलो
धम्म की .....

बुद्ध धम्म संघ शरण में आकर
जीवन सफल बनाओ
जन्म मरण का बंधन कटता
जन-जन को समझाओ
पाठ मानवता का पढ़ाते चलो
धम्म की .....

दुःख, दुःख-कारण, दुःख-निवारण
मार्ग है दुःख शमन का
शील, समाधि, प्रज्ञा में बँटा तीन
सुखदायक बहुजन का
विपश्यना में मन लगाते चलो
धम्म की .....

प्रबुद्ध नारायण बाबा का मिशन
मानवता का है खजाना
चौदह अक्टूबर सन् छप्पन
बाबा अपनाये, अपनाना
विनीत कारवाँ को बढ़ाते चलो
धम्म की .....।

(2)

बाबा साहेब आंबेडकर से ही
आज भारत हुआ महान
जागो जगाओ जवान
बोलो जय-जय संविधान

संविधान बदलेगा तो कह दो नादानों को
इतिहास गवाह देखो क्रांति के पैमानों को
हटेंगे बहुजन कभी न पीछे
करते हैं सुन लो ऐलान
जागो जगाओ .....

सबको अधिकार मिला इसी संविधान से
शिक्षा और सुरक्षा मिला भीम बलिदान से
जोश में आकर ना होश गवाना
करना सबका है सम्मान
जागो जगाओ .....

कहते नारायण नासूर ढोंगी पाखंडी को
छोड़े थे जलाकर बाबा मनुवादी मंडी को
आजाद भूलेगा कैसे भला यह
बाबा भीम जो दिये विधान
जागो जगाओ .....।

(3)

विश्वगुरु बुद्ध भगवान की
जय-जय हो बोलो
जय-जय करुणानिधान की
जय-जय .....

जय बुद्ध धम्म संघ शरण की
जय-जय बोलो बौद्ध धरम की
जय हो बौद्ध तीर्थस्थान की
जय-जय .....
चार आर्य सत्य ज्ञान की जय हो
पारमिता जो निर्वान की जय हो
जय-जय हो जनकल्याण की
जय-जय .....

समता नायक बहुजन ज्ञानी
जय-जय बोलो, जो भी हुये ध्यानी
जय-जय हो अशोक महान की
जय-जय .....

'नारायण' पंचशील की जय हो
अजय जग में धम्म-विजय हो
जय भीम जय संविधान की
जय-जय .....।

(4)

बाबा साहब भीम का जो सपना
साकार करो, अब साकार करो
कायर बने जीने से बेहतर
हितकारी बनो, उपकार करो
शिक्षित हो करके विद्वान बनो
संगठित हो करके भान बनो
संघर्ष करो तन-मन-धन से
अधजल में नाव, किनार करो
बाबा साहब भीम का .....

बलि होती सदा सुनो बकरों की
बलि होती है कभी नहीं शेरों की
बनके सिंह जागो करो गर्जना
अपनों का अब से सुधार करो
बाबा साहब भीम का .....

'नारायण' गुलामी की चादर को
सिर ओढ़े, पाते नहीं आदर को
बदला युग है, तुम भी बदलो
छोड़ों जाति की जाल विचार करो
बाबा साहब भीम का .....।

(5)

भूलो मत बाबा साहब क्या कह गये
दुःख असह सभी के लिए सह गये

अभी अधूरा है मिशन उनका पड़ा
बढ़ सका नहीं, बड़ा विरोधी दल खड़ा
जागो, सोओ मत, क्यों अरमां बह गये
भूलो मत .....

भाई! धम्मदीक्षा को कैसे भुला दिये
शिक्षा, राज, सत्ता मिशन को सुला दिये
निजी रक्षा का कवच सब दह गये
भूलो मत .....

पशु से बदतर रही जब जिंदगी
डर सहम करते थे जब बंदगी
गाँव से बाहर अभी हम रह गये
भूलो मत .....

'नारायण' कितनों का लहू, आँसू बहा
बाबा का सपना 'प्रबुद्ध भारत' रहा
समतामूलक मंच कहाँ तह गये
भूलो मत .....।

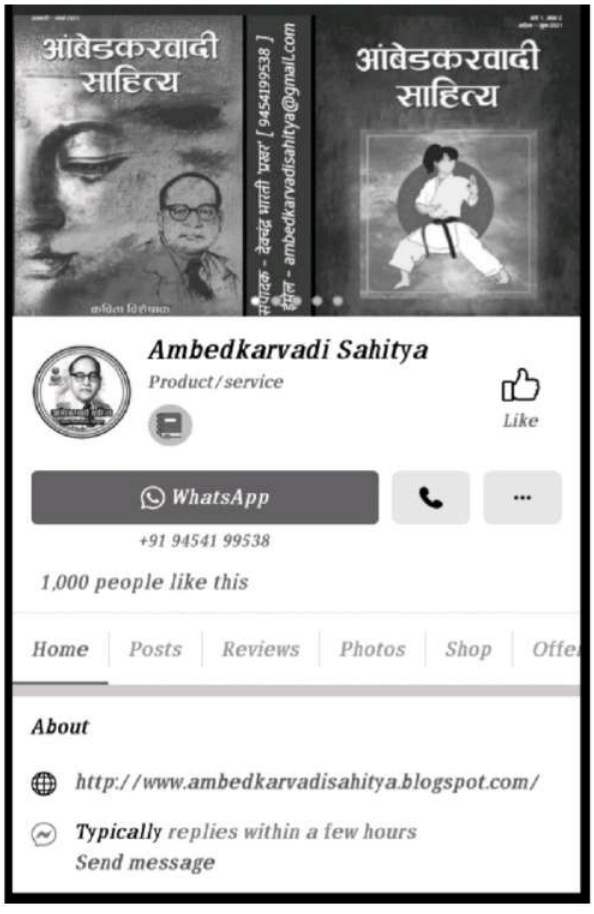

https://www.facebook.com/ambedkarvadisahitya2021/

सुरेंद्र आंबेडकर

जन्म : 07 मई 1977
जन्म स्थान : खतरीपुर (नारनौल)
पिता : श्रद्धेय जगदीश प्रसाद
माता : श्रद्धेया संतरा देवी
शिक्षा : एम.ए., बी.एड.
पत्राचार का पता : मकान नं. 71-डी, पोकर कॉलोनी, रेवाड़ी रोड, नारनौल (राधाकृष्ण मंदिर के पास) जिला- महेंद्रगढ़ (हरियाणा) पिन कोड : 123001
मोबाइल : 9802329333

लिखे गये व रिकार्ड किए गये गीतों के नाम

'जय जय जय संविधान', 'तेरे अहसान', मान दुनिया ने लोहा तेरे ज्ञान का'।

व्यवसाय : शिक्षक
जन्म स्थान : 71डी, पोकर कॉलोनी, रेवाड़ी रोड नारनौल, जिला- महेन्द्रगढ़, हरियाणा- 123001
मोबाइल नंबर : 9802329333

(1)

ज्योतिबा से ज्योति ले लो, भीमराव से ज्ञान।

बुद्ध की राह चलो और बोलो, जय जय जय संविधान।

पढ़कर शब्द कबीर के सीखो, जीवन दर्शन सारा।
और रैदास सिखाएं तुमको, बिन पाखण्ड गुजारा।।
हमें जगाने की खातिर था उनका हर बलिदान।
बुद्ध की राह चलो और बोलो जय जय जय संविधान।

पेरियार ने तर्क सिखाया, धर्म बिना ही जीना।
ललई सिंह यादव छुड़वाए काशी और मदीना।।
सन्त गाडगे, बिरसा मुंडा, उधमसिंह थे शान।
बुद्ध की राह चलो और बोलो जय जय जय संविधान।

फूलन ने बिजली बनकर, सामाजिक न्याय किया था।
और झलकारीबाई ने दुश्मन नाकाम किया था।।
फ़ातिमा, सावित्री बाई दे गई सब को ज्ञान।
बुद्ध की राह चलो और बोलो जय जय जय संविधान।

(2)

नारा हमारा, जयभीम यारा,
उनके जतन से, चमका सितारा।
दे गए वो वतन का विधान।
उनको सलाम हैं मेरा, उनको प्रणाम है मेरा।।
नारा हमारा, जयभीम यारा।।

धर्म के नारे, हैं हत्यारे, घेर के मारें, लोगों को।
भीम का नारा दूर भगाए, ठग मण्डली के रोगों को।।
लब मुस्कराए, दिल गुनगुनाए, था हलक अब तलक बेजुबान
उनको सलाम है मेरा, है मेरा
उनको प्रणाम है मेरा

नारा हमारा, जय भीम यारा।
काशी न भाए, ये मन चाहे, दीक्षाभूमि के रण को।
सारी रिवाजें, सारी कथाएं झूठ लगे हैं, अब मन को।।
छोड़ चुके हैं, पागलपन को।।
वो वर्ण, वो कर्म, वो ईमान।
उनको सलाम है मेरा,
उनको प्रणाम है मेरा।
नारा है प्यारा जयभीम यारा,

उनके जतन से, चमका सितारा।
दे गए वो वतन का विधान।
उनको सलाम है मेरा, उनको प्रणाम है मेरा।

(3)

सावित्रीबाई फुले का
अहसान चुकाना मुश्किल है।
शिक्षा की पहली ज्योति का,
प्रकाश भुलाना मुश्किल है।

लेकर थैले में दो साड़ी,
हर रोज निकलती थी घर से।
ना डरती थी ना रूकती थी
गाली कीचड़ व गोबर से।
सबको शिक्षा हथियार दिया,
अब हमें हराना मुश्किल है।

था काम बड़ा ये मेहनत का,
शाादी के बाद पढ़ाई का।
ज्योतिबा जी ने ठान लिया,
वंचित पिछड़ों की भलाई का।

और साथ लिया फातिमा को,
यूँ एक हो जाना मुश्किल है।

देकर अनाथ को स्वममता
सीने से लगा पाला पोसा।
खोला दोनों ने अस्पताल,
दुःखियों की सेवा ही सोचा।
इस राह में उनकी जान गई,
यूँ जान लुटाना मुश्किल है।

(4)

वो भीमराव थे, तो ये मुकाम है।
इज्जत है, दौलत है, ताकत तमाम है।
वो भीमराव थे, तो ये मुकाम है।
मंदिर से ना देवों से, मिला ये ईनाम है।

हो पीने का पानी हम को हासिल कहाँ था
विद्या व धन-बल, इनपे पहरा यहाँ था।
लन्दन पढ़ कर आए, हम को हक़ दिलवाए।
हो.. बुद्ध के राही को करोड़ों का सलाम है।

हो समझा धर्म को, जातियों के जुल्म को
वंचित पे होने वाले जुल्मों सितम को
धर्म नहीं ये साज़िश है, मानवता पर कालिख़ है।
हो .... छोड़ो धर्म को बोला मेरा ये पैगाम है।

नारी पे थी सामाजिक हजारों बेड़ियाँ।
तेरह की उम्र में उठ जाती डोलियां।
शादी की बढाई उम्र, पढ़ी बेटियाँ।
शिक्षा की बदोलत छूने लगी आसमां।
हो ... उनकी वजह से नारी शोषण पे विराम है।

चन्दन कुमार

जन्म : 10 जुलाई 1985
जन्म स्थान : सरहुआ, गाजीपुर
पिता का नाम : कालिका प्रसाद
माता का नाम : सरस्वती
शिक्षा : एम.ए. (समाजशास्त्र), एम.एफ.ए. (व्यक्तिचित्र)
गीत : आया देश विक्रेता, चल दीवाने चलता चल, कहाँ न्याय पाओगे, बहुजन, महा संविधान, मुझे जीने दो, कारवां रूके ना कसम खालो, अपने वतन को चलो फिर से सजाए ... आदि
पेशा : प्रवक्ता (समाजशास्त्र)
पत्राचार का पता : ग्राम व पोस्ट- सरहुआ, जिला- गाजीपुर, उ.प्र. पिनकोड- 232326
मोबाइल नंबर : 7754013901

गीत- 1

इन आँधियो का भी आना बढ़ा है तबसे पूरे शहर में, रिजर्वेशन का एक दीया जला है जब से हमारे घर में!

1. है बात तो बड़ी छोटी, पर बूझो तो मतलब बहुत बड़े है, तो देखा तो बहुजन झूके हुए है बूझो तो

बहुजन गिरे पड़े हैं!

2. है आज हालत तो भी हमारी सारे दुखों का एक ही कारन, कि कर सके ना सावित्री पैदा घर-घर पैदा किये पुजारन!
3. ये धर्म है या हवा है क्या है? बदलता जिसका हमेशा रूत है, हो कोई शंकट तो सारे हिन्दू ना कोई शंकट तो हम अछूत हैं!
4. जो पूर्वजों से मिला है हमको, वो सीख चंदन कभी ना भूलो, बढ़ालो कद अपना इस कदर कि जरा सा उचको आकाश छू लो!

गीत- 2

सबसे जुदा है मेरा भारत रे मितवा ... सबसे जुदा है दे जो सबको सम्मान, ऐसा महासंविधान कहीं और कहाँ .... और कहाँ-सबसे जुदा है मेरा भारत रे मितवा, सबसे जुदा है

1. धर्म कोई चाहे जाति कोई हो, कोई भी भाषा-भाषी हो है अधिकार बराबर सबका, सब हैं भारतवासी हो! पंजाब सबका, गोवा है सबका, सबका पटना काशी हो! बसता वहीं वो जहाँ चाहत रे मितवा ... बसता वहीं रेख्चा सबका ध्यान, ऐसा महासंविधान कहीं और कहाँ ... और कहाँ सबसे जुदा है मेरा भारत रे मितवा ... सबसे जुदा है
2. अकबर का है दिन-ए-ईलाही, बुद्धा का उपदेश है, नानक का पग और विवेकानन्द का भगवा वेश है! अपना भी चंदन वतन वही जो, भगत शिवा का देश है! सब ना वतन ऐसा पावत रे मितवा .... सब ना, रखे सबका ध्यान, ऐसा महासंविधान कहीं और कहाँ .... और कहाँ सबसे जुदा है मेरा भारत रे मितवा।

गीत- 3

कारवां रूके ना कसम खालो
ऐ बहुजन मेरे, इसको न गवांना,
मुश्किल से हमने पाया है ठिकाना,
कारवां रूके ना कसम खालो- संभालो इसे मैं तो चला

1. जीवन के इस आखिरी पल में, अपने जनों से इतना कहूँगा, जब तक शब्द हैं जिन्दा मेरे, तब तक मैं भी जिन्दा रहूँगा! कहीं मर ना जाऊँ, बचाओ-संभालों इसे मैं तो चला ....
2. हावी है मनुवाद देश में, बहुजन की तो राह कठिन है, एक रहोगे सब कर लोगे वरना कुछ भी नामुमकिन है! एकता अटूट बनालो-संभालो इसे मैं तो चला
3. चंदन भ्रम से बाहर निकलो, सत्य को समझो जो सबसे उपर है, लौटो विशाल जी घर को वापस बौद्ध ही तेरा अपना घर है! बुद्ध की शरन अपनालो-संभालो इसे मैं तो चला।

देवचंद्र भारती 'प्रखर'

जन्म : 05 अगस्त 1991

माता : सुशीला देवी

पिता : जयश्री प्रसाद

शिक्षा : एम.ए., बी.एड., नेट/जेआरएफ

प्रकाशित कृतियाँ : वेदना की शांति (कविता संग्रह), परिणय (खंडकाव्य), लज़्ज़त-ए-अलम (गज़ल संग्रह), दलित जागरण (कविता संग्रह), समकालीन हिंदी दलित कविता (साझा काव्य संग्रह), आंबेडकरवादी कविता के प्रतिमान, श्यामलाल राही प्रियदर्शी-व्यक्तित्व एवं कृतित्व (आलोचना-ग्रंथ)

अन्य : विभिन्न राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में शोध-पत्र, पुस्तक समीक्षाएँ, कविताएँ और लेख प्रकाशित।

संपादन : आंबेडकरवादी साहित्य (त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका)।

संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हरिनंदन स्नातकोत्तर महाविद्यालय मोहरगंज, चंदौली, उत्तर प्रदेश

निवास : ग्राम- कटसिल, पोस्ट-दिघवट, जिला- चंदौली, उत्तर प्रदेश- 232108

दूरभाष : 9454199538, 8858818028

ई-मेल : prakhar05412@gmail.com

(1)

बुद्ध से कोई प्यारा नहीं
बुद्ध जैसा सहारा नहीं
झूठ के ऐसे संसार में
बुद्ध के बिन गुजारा नहीं

बुद्ध से जो भी अनजान है
वो दुखी है, परेशान है
नासमझ और नादान है
बुद्ध को जो निहारा नहीं
झूठ के ऐसे .....

अंधेरे में अकड़ते हो क्यों
परछाई पकड़ते हो क्यों
उस नदी में उतरते हो क्यों
जिसका कोई किनारा नहीं
झूठ के ऐसे .....

ढोंग से किसको क्या है मिला
बंद कर दो ये सब सिलसिला
फिर कभी ना ये करना गिला
कि 'प्रखर' ने पुकारा नहीं
झूठ के ऐसे .....।

(2)

ये बुद्ध की जमीं है, ये धम्म की जमीं है
संघ है यहाँ तो फिर किस बात की कमी है
ये बुद्ध की जमीं है .....

संघ के साए में रहते सभी हैं
एकता की बातें कहते सभी हैं
संघ से अलग दुनिया में कौन आदमी है
ये बुद्ध की जमीं है .....

शील की चाहत है सबके दिलों में
करुणा की बात होती सभी महफिलों में
सबकी निगाहों में गम की नमी है
ये बुद्ध की जमीं है .....

अज्ञानता से ही मिले परेशानी
ज्ञान की डगर है बुद्ध की निशानी
हकीकत यही 'प्रखर' यही लाजमी है
ये बुद्ध की जमीं है .....।

(3)

बुद्ध की शरण मिल गई है रोशनी के लिए
अब और क्या चाहिए जिंदगी के लिए

गम को खाते थे, आँसू पीते थे
क्या बतलाएँ हम, कैसे जीते थे
मिल गया हमें एक रहगुजर
दे गया हमें धम्म की डगर
कहते हैं लोग जिसे साहेब आंबेडकर
धम्म की शरण मिल गई है
सादगी के लिए
अब और क्या .....

खुशियाँ मिलती हैं मिलके रहने से
गम ना कम होता सबसे कहने से
राह में 'प्रखर' राह कम नहीं
जिंदगी है कम, चाह कम नहीं
गम का गम है उसे जिसका हमदम नहीं
संघ की शरण मिल गई है
हमनशी के लिए
अब और क्या .....।

(4)

बुद्ध तथागत की अजब कहानी है
इस दुनिया के हर कोने में बुद्ध की बानी है
बुद्ध तथागत की .....

जो बर्मा, श्रीलंका जाए
गौतम का ही डंका पाए
गौतम के प्रेमी भूटानी और जापानी हैं
बुद्ध तथागत की .....

बुद्ध की राह 'प्रखर' अपनाये
बुद्ध वचन जन-जन को सुनाये
बुद्ध नहीं तो बचपन होता, बुद्ध जवानी हैं
बुद्ध तथागत की .....।

(5)

बहुत कुछ है समय बदला
समय कुछ और बदलेगा
भरम जो है भरा मन में
भरम वह मन से निकलेगा

वह भी समय होगा
ये भारत बौद्धमय होगा

यह तो विज्ञान का युग है
सत्य के ज्ञान का युग है
हो रही धम्म की चर्चा
धम्म के ध्यान का युग है
रोका है किसने समय चक्र को
समय ज्वालामुखी बनकर
क्रांति का लावा उगलेगा
भरम जो है भरा .....

सुनो ना काल्पनिक किस्से
करो अब तर्क की बातें
बिना सिर पैर की हैं ये
स्वर्ग या नर्क की बातें
कुछ ना मिलेगा पाखंड से
गिरा दो दूध जितना भी
'प्रखर' पत्थर ना पिघलेगा
भरम जो है .....।

(6)

कैसे मैं सुनाऊँ तुम्हें आजकल बात इतिहास की
असली कहानी छुपाई गई संत रैदास की

भक्ति नहीं किए, जूता नहीं सीए
सच यह जान लो
गंगा नदी कहो, देवी नहीं कहो
अब यह मान लो
निर्गुण धारा के वह योगी
कृष्णकथा से जोड़े ढोंगी
सुनो ना कभी तुम, कहो ना कभी बात बकवास की
असली कहानी छुपाई गई .....

चाहे जहाँ रहो, खुलके सदा कहो
जय गुरु रविदास
इच्छा किए बिना, शिक्षा लिए बिना
होगा ना विकास
वेदों की अब बातें छोड़ो
विज्ञानों से नाता जोड़ो
कहते 'प्रखर' अब तो छोड़ो डगर अंधविश्वास की
असली कहानी छुपाई गई .....।

(7)

रैदास के सच की खोज करो
रैदास पे चिंतन रोज करो

भक्ति के घेरे में ना रहो तुम
रैदास को ना भक्त कहो तुम
दासों के जैसा ना भोज करो
रैदास के सच की .....

'प्रखर' सुनाएँ रैदास बानी
रैदास जी की सच्ची कहानी
पाखंड में ना मौज करो
रैदास के सच की .....।

(8)

रैदास कहें ऐसा होना
कि हो ना जीवन में रोना
जो राह दिखाया साहब ने
वह राह कभी तुम ना खोना

इस दुनिया में वह रोता है
जो दुनिया को ना जाने
वह गैरों की बातें करता
जो खुद को ना पहचाने
जाग रहा है बहुजन सारा
जाग उठो तुम, ना सोना
रैदास कहें .....

सब कहते हैं तो कहने दो
बात नहीं तुम दोहराओ
झूठे का है शोर यहाँ पर
झूठ कभी तुम ना गाओ
इस मैली गंगा में 'प्रखर'
हाथ कभी तुम ना धोना
रैदास कहें .....।

(9)

जो सद्‌गुरु से नेह लगाए
वह जीवन का असली सुख पाए
कि सत्ज्ञानी कहते हैं
सब ज्ञानी कहते हैं

जीने वाले दुनिया में जैसे-तैसे जीते हैं
खुशियों की खातिर गम के आँसू पीते हैं
सपनों की चाह में जो सच भूल जाते हैं
भटकें वही, जो सही राह नहीं पाते हैं
गुरू रैदास बताएँ
जो सद्‌गुरु से .....

सद्‌गुरु संत शिरोमणि सच्चे ज्ञानी हैं
साधक, सिद्धपुरुष, करुणा के दानी हैं
सद्‌गुरु संयम, शील ही सिखाते हैं
जीवन सफल बनाएँ
जो सद्‌गुरु से .....।

(10)

नमो बुद्धाय कहना सदा
नमो भीमाय कहना सदा
बुद्ध ही सहारा अपना
भीम ही हमारा अपना
इनकी शरण में हमको रहना सदा

जग में कोई ऐसा ना हुआ
बाबा साहेब जैसा ना हुआ
साहेब ने उपकार किया
बहुजन को अधिकार दिया
बाबा साहेब का सपना
अब हमने समझा अपना
इनकी ही धारा में है बहना सदा
नमो बुद्धाय .....

साहेब से है अपना वास्ता
सच्चा है साहेब का रास्ता
'प्रखर' ने ये ठाना है
आगे बढ़ते जाना है
भीम हमारी हिम्मत हैं
भीम हमारी ताकत हैं
इनके लिए लाखों गम सहना सदा
नमो बुद्धाय .....।

गायक

जयप्रकाश राही

जन्म : 01 जनवरी 1984
पिता : सहदेव प्रसाद
माता : बाची देवी
पत्नी : प्रभा राही
पुत्री : नित्या राही
शिक्षा : हाई स्कूल

रिकॉर्ड किये गये गीत :

1. रविदास जी की बानी मन में उतार कर के, हम खुश हैं आज अपना जीवन सुधार करके।
2. सलामत रहे संत रविदास बानी
3. तूफान जैसे हम जय-भीम वाले हैं।
4. रंग जाऊँगा मैं आंबेडकर के रंग में।
5. आते हैं जब रविदास हमारी गलियों में।
6. संत रविदास कीर्तन
7. गुरु रविदास के पूजा (भोजपूरी)
8. रविदास धाम चला (भोजपूरी)
9. कवने दिशा में बाटे बुद्ध क नगरिया (भोजपुरी)
10. फहरे पंचशील क झंडा (भोजपुरी)
11. धन्य रहले कांशीराम वीरनवा हो, ओनके करीला नमनवा।
12. अब ना चली मनमानी हो कुर्सी के दललवा।

पेशा : दर्जी
पता : ग्राम- कटसिल, पोस्ट- दिघवट, जिला- चंदौली, उत्तर प्रदेश,
मो. : 8423648830

विशाल गाजीपुरी

जन्म : 06 जून 1996
पिता : सुरेंद्र राम

रिकॉर्ड किये गये गीत

सुनो कहानी आंबेडकर की, करवाँ रूके ना कसम खा लो, जय भीम वालो को डरना मना, तूने बौद्ध चुना है किसलिए, कहाँ न्याय पाओगे बहुजन, ओ माँ कर्मा के लाला, ये जो तिरंगा-ये जो संविधान है, ओ धन सेठों के चौकीदार, चल दीवाने चलता चल, आया देश-विक्रेता, अंधेर नगर चौपट राजा।

संपर्क : ग्राम- कोटिका, बिशनपरा, पोस्ट- नोनहरा, जिला- गाजीपुर, उत्तर प्रदेश- 233303

मोबाइल : 8542898932, 7905378524

गायक का स्वकथनः

मैं विशाल गाजीपुरी, जब प्राथमिक विद्यालय में पढ़ता था, तब मेरा सपना था कि मैं पढ़ाई लिखाई के साथ-साथ संगीत की दुनिया में बहुत बड़ी प्रसिद्धि हासिल करूँगा और आने वाले समय समय में अमिताभ बच्चन बन करके अपने घर की गरीबी दूर करुँगा, बड़ा-बड़ा बंगला बनाऊँगा, गाड़ी लूँगा, लेकिन जब सन् 2007 में अपने महापुरूषों के बारे में जानकारी हुई, तो मैं बाबा साहेब

डॉ. भीमराव आंबेडकर जी के विवाह गीत गाते थे, लेकिन दूसरा भी गीत गाया करता था। जब सन् 2013 में अपने महापुरूषों के बारे में पूर्ण रूप से जानकारी हुई, तब से मैंने अपने सारे सपने को भूलकर अपने महापुरूषों की विचारधारा पर गीत गाना शुरू कर दिया और आज पूरे देश के लोग विशाल गाजीपुरी को जान रहे हैं, सपोर्ट कर रहे हैं। मैंने संकल्प लिया है कि जब तक मेरा गला काम करेगा, जब तक ये मेरे साँसे रहेंगी, तब तक अपने बहुजन महापुरूषों की विचारधारा को गीत के माध्यम से समाज तक पहुँचाता रहूँगा।

रविराज बौद्ध

जन्म : 15 अगस्त 1997

जन्म स्थान : बसवारी, घरिहाँ-मदरह, गाजीपुर

पिता का नाम : रामचन्द्र राम

माता का नाम : राजवती देवी

शिक्षा : बी.ए., बी.टी.सी.

रिकॉर्ड किये गये गीतों के नाम-

1. बढ़ा-बढ़ा बहुजन
2. लड़ाई बाबा भीम जी लड़े
3. माता सावित्रीबाई फूले की अमर कहानी
4. दिल्ली शहर से लईहा हो
5. मास्टराइन भईलू
6. भीम के करनवा
7. संसद की शेरनी
8. बाबा साहब के अमर रही नमवा
9. अरतिया कला ये ननदी
10. सड़िया पंचशील वाली
11. 14 अप्रैल आया
12. जब तक सूर्य और चाँद रहे
13. मनीषा बहन को इन्साफ चाहिए
14. तू आ जईता दुबई से

पेशा/व्यवसाय : गायकी

पत्राचार का पता: ग्राम- बसवारी, पोस्ट- घरिहाँ, थाना- मरदह, जिला- गाजीपुर, पिन- 233226

मोबाइल नंबर : 7309973574

गायक का स्वकथन :

पूरी दुनिया में लोग जब नाक साफ करना भी नहीं जानते थे, उस समय हमारा भारत देश सोने की चिड़िया हुआ करता था। क्योंकि यहाँ पर सिन्धु घाटी, मोहनजोदड़ो जैसी विकसित सभ्यताओं के साथ-साथ नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय पाये जाते थे। जहाँ पर विश्व के अनेक देशों से छात्र-छात्राएं पढ़ने आते थे। बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे। चारों तरफ समता और समानता थी। यह देश बौद्धो का हुआ करता था। यहाँ पर भारत के आदिवासी, मूलनिवासी राजा हुआ करते थे। पर मध्य एशिया से आये हुए कुछ आर्यो के द्वारा साम, दाम, दण्ड, भेद, धोखे-छल और अपने साथ लाये मदिरा से हमारे पूर्वज राजाओं की हत्याएं करके हमारे देश को बर्बाद कर दिया गया। भारत के मूलनिवासियों को शिक्षा, धन, सम्मान आदि से वंचित करके अत्याचार किया जाने लगा। हम मूलनिवासियों को मानसिक गुलाम बनाने के लिए धीरे-धीरे इस देश में तमाम प्रकार की कुप्रथाएं बनायी गयीं। तमाम प्रकार के ढोंग और आडम्बर बनाये गये। हमें आर्थिक रूप से कमजोर करने के लिए हजारों त्यौहार बनाये गये और इस देश को बर्बाद कर दिया गया। कांग्रेस की सरकार ने दूरदर्शन के माध्यम से और भारतीय सिनेमा ने बालीवुड के माध्यम से इस देश को ढोंग, पाखंड, अंधकार, अशिक्षा और नशे में धकेलने का काम किया। इसलिए मैंने ये प्रण लिया है कि जिस सिनेमा के माध्यम से हमारा भोला-भाला समाज ढोंग-पाखण्ड, अंधकार-अशिक्षा और नशे में गया है, उसी सिनेमा के माध्यम से बाहर लाऊँगा और महापुरुषों की समता, समानता, भाईचारा और न्याय की विचारधारा को आगे बढ़ाता रहूँगा।

जालंधर बागी

जन्म : 12 जुलाई 1999

जन्म स्थान : जलालपुर (दरियापुर)

पिता का नाम : श्रद्धेय हीराला

माता का नाम : श्रद्धेया कलावती देवी

शिक्षा : आई टी आई

रिकॉर्ड किये गये गीतों के नाम-

1. माघ पूर्णिमा पे घरे आजा
2. रविदास जी काहे बाटेला हो
3. धम्मदीक्षा दिवस मनावल जाई
4. गुरु रविदास जी का मिलल पतिया

पत्राचार का पता : जलालपुर (दरियापुर), बथावर सकलडीहा, चंदौली-232109

मोबाइल नंबर - 9161748067

प्रीति बौद्ध

जन्म : 27 दिसम्बर 1999

जन्म स्थान : गोपालपुर पलिया रानीपुर

पिता का नाम : परि. राजकुमार भारती

माता का नाम : डॉ. प्रमिला गौतम

शिक्षा : बी.एससी

रिकॉर्ड किये गये गीतों के नाम-

1. बढ़ा-बढ़ा बहुजन
2. माता सावित्रीबाई फूले की अमर कहानी
3. मास्टराइन भईलू
4. भीम के करनवा
5. 14 अप्रैल आया
6. जब तक सूर्य और चाँद रहे
7. मनीषा बहन को इन्साफ चाहिए
8. तू आ जईता दुबई से
9. समता का अधिकार
10. काशी-मथुरा गूंजेगा जयकारा जय भीम के
11. बहन जी को सी.एम. बनाना है
12. छपवादा चुनर मोर नीला

पेशा/व्यवसाय : गायकी

पत्राचार का पता : ग्राम- गोपालपुर, पोस्ट- पलिया, थाना- रानीपुर, जिला- मऊ, पिन

मोबाइल नंबर : 7309973574

सपना बौद्ध

जन्म : 1 जनवरी 2000

पत्नी : विशाल गाजीपुरी

रिकार्ड किये गये गीत

: जय भीम वालों को डरना मना, तूने बौद्ध चुना है किसलिए, कहाँ न्याय पाओगे बहुजन, ओ माँ कर्मा के लाला, ये जो तिरंगा-ये जो संविधान है, ओ धन सेठों के चौकीदार, चल दीवाने चलता चल, आया देश-विक्रेता, अंधेर नगरी चौपट राजा।

संपर्क : ग्राम- बिशनपुरा, पोस्ट- नोनहरा, जिला- गाजीपुर, उ.प्र.- 233303

मोबाइल नंबर : 8542898932, 7905378524

गायिका का स्वकथन-

: मैं सपना बौद्ध, जब अपने गाँव में प्राथमिक विद्यालय में पढ़ा करती थी, तब मेरा सपना था कि आने वाले समय में मैं बहुत बड़ी सिंगर बन करके अपने माता-पिता और पूरे गाँव का नाम व पूरे देश का नाम

रोशन करूँगी। साथ ही, घर की गरीबी दूर करके चैन-अमन की जिंदगी जीऊँगी। लेकिन जब अपने बहुजन महापुरुषों के बारे में विशाल गाजीपुरी जी के माध्यम से पता चला, तब से मैंने संकल्प लिया कि मैं विशाल गाजीपुरी के साथ कदम से कदम मिलाकर उनकी जीवन संगिनी बन करके पूरे बहुजन महापुरुषों की विचारधारा को समाज तक पहुँचाऊँगी। इसके लिए भले ही मुझे भूखा रहना पड़ेगा, लेकिन जब तक कि मेरा गला काम करेगा, जब तक मेरी साँसे रहेंगी, तब तक अपने बहुजन महापुरुषों की विचारधारा को गीत के माध्यम से समाज तक पहुँचाती रहूँगी।

पंकज राज

जन्म : 12 अगस्त 2001

जन्म स्थान : डुमराव पूर्व पूरा उत्तर प्रदेश मऊ

पिता का नाम : विनोद राम

माता का नाम : विद्यावती देवी

शिक्षा : हाईस्कूल पास

रिकार्ड किये गये गीत

1. भीम के दर्शन करा दी यह ए सजनवा
2. बाबा साहेब दिलवाले आजादी

पेशा/व्यवसाय : किसान

मोबाइल नंबर : 7080988037

मजनू गौतम

जन्म : 08 सितम्बर 2002

जन्म स्थान : सहरोजा साहुलाई

पिता का नाम : सुरेश राम

माता का नाम : बुधिया देवी

शिक्षा : हाईस्कूल पास

रिकार्ड किये गये गीत

1. सजल बाटे गुरू दरबार हो
2. इंतजार तनी कर मोर रानी
3. नाही देशवा में बावे केहू बाबा भीमजस महानवा हो
4. छोड़ा पूजा पाठ ए गोरी
5. देशवा के रतन बाबा भीम महान बाटे
6. साहेब के सपनवा
7. लंदन में बाबा साहेब कइले पढ़ाई
8. बाबा के जुलूस में भुला जईबू
9. सजनवा सखी सुंदर मिली हो
10. भीम चर्चा
11. जय भीम जय रविदास कहिए
12. रविदास जयंती मनाएंगे ठीक है

मोबाइल नंबर : 7082369490

आराधना बौद्ध

जन्म : 03 सितम्बर 2004

जन्म स्थान : मनियारपुर

पिता का नाम : अजय कुमार

माता का नाम : राजकुमारी

शिक्षा : 12वीं पास

रिकार्ड किये गये गीत

1. रुके नहीं कभी बाबा साहब का कारवाँ
2. बुद्ध से कोई प्यारा नहीं
3. रंग जाऊँगी मैं आंबेडकर के रंग में
4. संत रविदास के काँहें बाटेला हो
5. दुःख सौतन के कैईसे सहीं
6. कौन दिशा में बाटे बुद्ध क नगरिया
7. प्यार बन गईल खिलवाड़ हो

व्यवसाय : शिक्षा

पोस्ट का पता : मनियारपुर, चन्दौली - 232108

मोबाइल नंबर : 9889752066

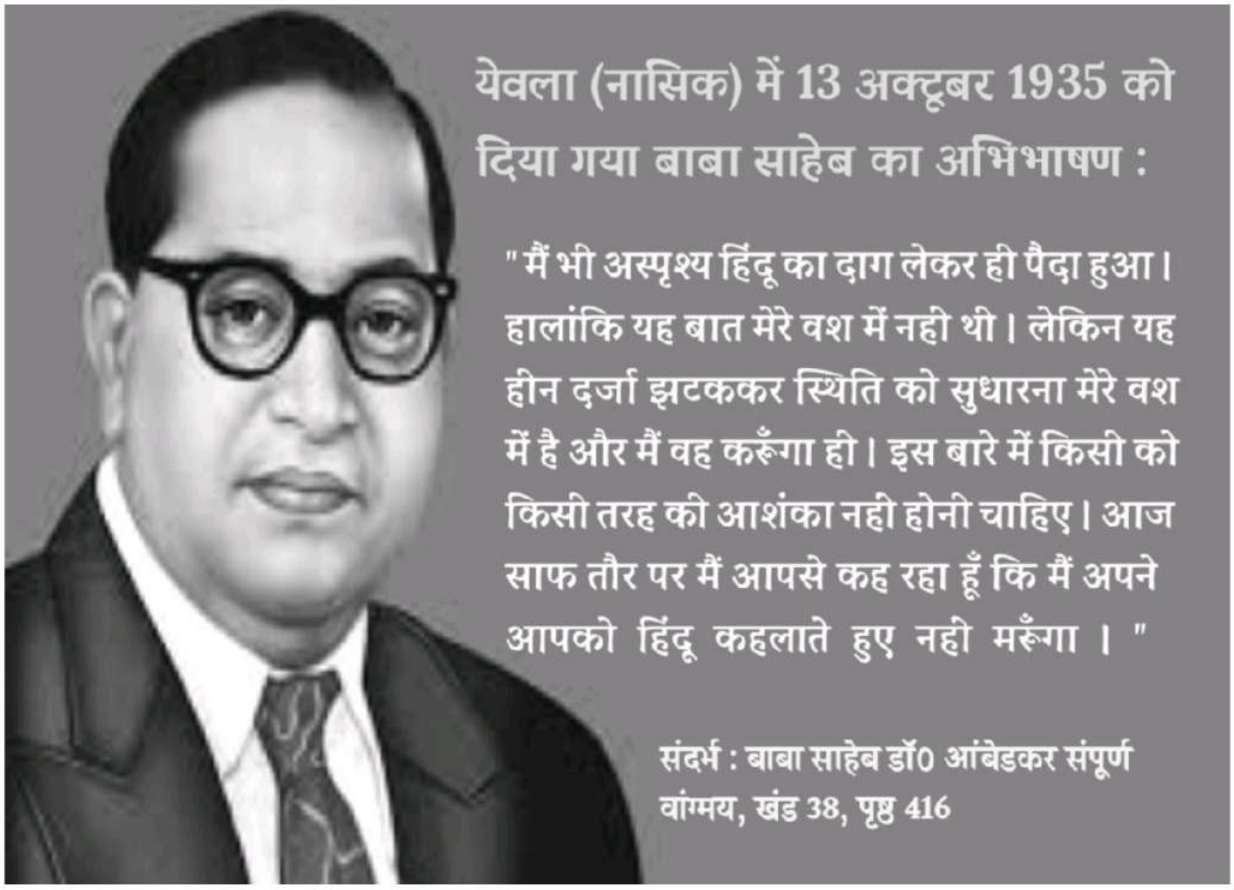
येवला (नासिक) में 13 अक्टूबर 1935 को दिया गया बाबा साहेब का अभिभाषण :
" मैं भी अस्पृश्य हिंदू का दाग लेकर ही पैदा हुआ। हालांकि यह बात मेरे वश में नही थी। लेकिन यह हीन दर्जा झटककर स्थिति को सुधारना मेरे वश में है और मैं वह करूँगा ही। इस बारे में किसी को किसी तरह की आशंका नही होनी चाहिए। आज साफ तौर पर मैं आपसे कह रहा हूँ कि मैं अपने आपको हिंदू कहलाते हुए नही मरूँगा । "
संदर्भ : बाबा साहेब डॉ0 आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय, खंड 38, पृष्ठ 416

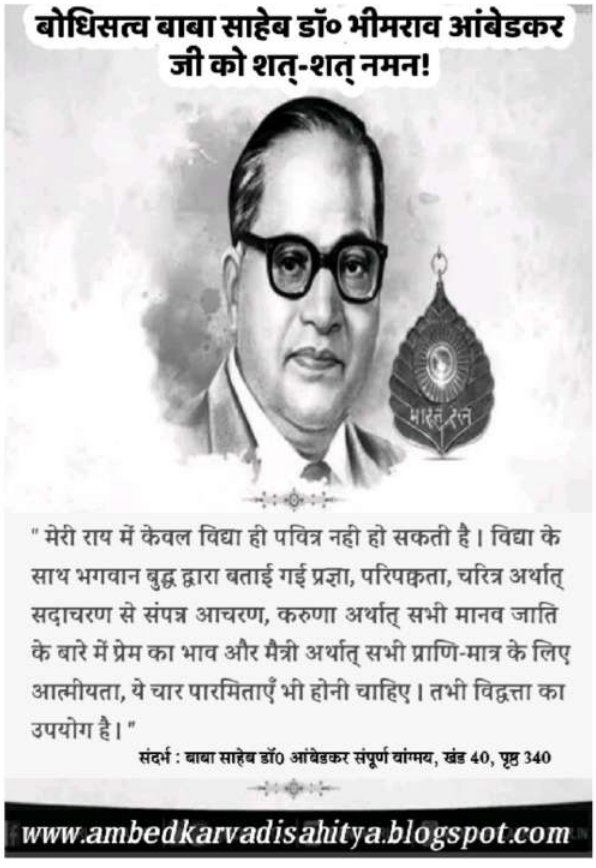
बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ० भीमराव आंबेडकर जी को शत्-शत् नमन!
" मेरी राय में केवल विद्या ही पवित्र नही हो सकती है। विद्या के साथ भगवान बुद्ध द्वारा बताई गई प्रज्ञा, परिपक्वता, चरित्र अर्थात् सदाचरण से संपन्न आचरण, करुणा अर्थात् सभी मानव जाति के बारे में प्रेम का भाव और मैत्री अर्थात् सभी प्राणि-मात्र के लिए आत्मीयता, ये चार पारमिताएँ भी होनी चाहिए। तभी विद्वत्ता का उपयोग है। "
संदर्भ : बाबा साहेब डॉ0 आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय, खंड 40, पृष्ठ 340
www.ambedkarvadisahitya.blogspot.com

" हमें अपने ज्ञान का केवल परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए इस्तेमाल नही करना है। हमें अपने ज्ञान का उपयोग कर अपने बंधु-बांधवों में सुधार लाना है, उनकी संपूर्ण प्रगति के लिए इस ज्ञान का इस्तेमाल करना है। तभी भारत की उन्नति होगी। "
संदर्भ : बाबा साहेब डॉ0 आंबेडकर संपूर्ण वांग्मय, खंड 40, पृष्ठ 340

कविता व ग़ज़ल

श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी' की गज़लें

(1)

जाने क्यों लोग मेरी जाति से जल जाते हैं।
हमारे काम और औकात से जल जाते हैं।

हमने मेहनत से ये अपना मुकाम पाया है,
जलने वाले मगर इस बात से जल जाते हैं।

हमको सदियों से दबा रखा था जिन लोगों ने,
अब वही हमारे जज़्बात से जल जाते हैं।

ऊँच और नीच की जो खाई बना रखी थी,
हमने पाटा तो वे बदलाव से जल जाते हैं।

बेटियाँ देके जो पाते थे हुकूमत ओ ताज,
अब सब छिन गया तो ईर्ष्या से जल जाते हैं।

हमने आईन को अपना बनाया है सरपरस्त,
मगर वे लोग तो आईन से जल जाते हैं।

हमारी राह में वे दुश्वारियाँ हैं पैदा करते,
सोच कर अपने वो अंजाम से जल जाते हैं।

राही हम डरते नहीं अब बड़ी बाधाओं से,
सिर फिरे बस ऐसे हौसलों से जल जाते हैं।

(2)

पहले प्रेम से है मिलते हर बात पूछते हैं।
लेते हाल चाल हँस के फिर जाति पूछते हैं।

उनको पता हमारी जब जाति चल गई,
तब से बात बात पर मेरी औकात पूछते हैं।

कुछ लोग बनाते हैं यहाँ बातों के बताशे,
दुनिया तो दुनिया वो कायनात पूछते हैं।

आरक्षण से पहले की जरा हालात बताओ,
दिल के हमारे जलते जज़्बात पूछते हैं।

जब काम कोई उनके पड़ जाये गर हमारा,
क्या भेंट में तू देगा वो सौगात पूछते हैं।

भूखे बच्चे ग़रीबों के बेहाल भूख से हो,
हमें कब मिलेगा खाना दिन रात पूछते हैं।

कल उनका फोन आया कहाँ रहते हो जहाँ में
कब तुमसे होगी प्यारे मुलाकात पूछते हैं।

राही कर तरक्की अपनी वो बन गये बड़े हैं
मेरी जिन्दगी के बिगड़े हालात पूछते हैं।

(3)

हमारे शहर को हुआ क्या है।
धूल और धुयें की दवा क्या है।

सारी बद इंतजामी हरसू दिखे,
देख लो गलियों की दशा क्या है।

घुट रहा दम हमारे लोगों का,
वोट देकर भी कुछ मिला क्या है।

दोनों ही मजबूर अपनी आदत से,
रिश्ता गुल ख़ारों में निभा क्या है।

खुश वो संतोष रख तू अपने पर,
ये दुआ है तो बद्दुआ क्या है।

उसने आकाश से उतर करके,
पैरहन तेरा फिर छुआ क्या है।

नीम बेहोश घर शहर सब है,
राही खामोशी के सिवा क्या है।

(4)

तुम तो बाहर की बात करते हो,
लड़कियां पेट में महफूज़ नहीं।

जिन्दगी ये बिना उस्तादों के,
पाती है ठीक से उरूज़ नहीं।

देखिए जिसको भी इस दुनिया में,
दिखता है कोई भी महजूज नहीं।

आज का ये तकाजा फैशन है,
कोई बशर बाप का मकरूज नहीं।

कर दिया साइंसदानों ने गजब है,
किस समय मिलते हैं तरबूज नहीं।

जब से गन्दे पानी ने तालाबों को बर्बाद किया
तब से खिलते वहाँ अम्बूज नहीं।

जब से तालिबान ने है कब्जा किया,
देश में उठती है अब कूज नहीं।

सूख तालाब गये सब शहरी,
पालता इसलिए कोई गूज नहीं।

मौलबी कहते राही ईद परसों होगी,
आज गिनती में लगती दूज नहीं।

महजूज/खुश, मकरूज/कर्जदार,
कूज/आवाज गूज/बता की श्रेणी का पक्षी

पता : बरेली, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 9456045567

प्रबुद्ध नारायण बौद्ध जी के साथ
देवचंद्र भारती 'प्रखर'

डॉ. राम मनोहर राव की गज़लें

(1)

कुछ बदलाव बदल क्या पाए सकल वैसे।
वर्षो पुराना संविधान कर पाए अमल वैसे।।

वोट की ख़ातिर जातियों के होते सम्मेलन।
जेहनियत शोषण की क्या पाए बदल वैसे।।

लोकतंत्र का मतलब उन्हें बेहतर मालूम।
जिताऊ वोट पिछड़ों के पाए असल वैसे।।

चुप बैठेंगे कब तक जुल्म रहेंगे यूँ सहते।
शोषक के ज़ाल से क्या पाए निकल वैसे।।

जलाया चौरासी वर्षों पूर्व बाबा साहब ने।
शोषक शोषित फिर कर पाए अमल वैसे।।

तथाकथित जागरूक कहें दलित स्वयं को।
जेहनियत क्या शोषण की पाए मसल वैसे।।

आंबेडकरवाद सिखाये असल मानवतावाद।
मनोहर सत्ता को वंचित भी जाए मचल वैसे।।

(2)

संवैधानिक हित हमारे वो कैसे गटक रहे हैं।
हम हैं कि बहकावे में आके कैसे भटक रहे हैं।।
संविधान के कारण कुछ शिक्षित हुए ज़रूर।
अब वही आँखों में उनकी कैसे खटक रहे हैं।।

आरक्षण से जो पा गए कोई सरकारी नौकरी।
प्रतिनिधित्व की जिम्मेदारी से वो छटक रहे हैं।।

सरकारी महकमों में आरक्षण से मिलते जॉब।
बिक रहे सरकारी प्रतिष्ठान जॉब सटक रहे हैं।।

लोकतंत्र में सत्ता उसे हासिल जीते जो चुनाव।
जो जबर या पैसे दे फुसला वोट झटक रहे हैं।।

दलों संग जाते ये भी बँट भविष्य से अनजान।
उनके रूपयों की पी के दारू कैस मटक रहे हैं।।

कितना भी समझ- बूझ गठबंधन चाहें करना।
कुत्सित चालों में फँस पास भी न फटक रहे हैं।।

फूट डाल मनोहर कुर्सी पे होते हैं वे काबिज़।
सत्ता मिलते ही पिटे को फिर से पटक रहे हैं।।

(3)

आचरण कर्म कोई सा आडम्बर छोड़ो तो सही।
राह मानवता की चुनो पाखंड छोड़ो तो सही।।

जिनका भी योगदान रहा राष्ट्र निर्माण के वास्ते।
जाति देखके मूल्यांकन पक्षपात छोड़ों तो सही।।

सादगी से न रह पाओ, हमें इसका गिला नहीं।
पहनना लिबास फ़रेब का तुम छोड़ो तो सही।।

मददगार न बन सके कोई कहे तो कहे क्या।
शोषण मजलूमों का तुम अब छोड़ो तो सही।।

अंग्रेज देश तो छोड़े, मनोहर बदले हालात कहाँ।
सामाजिक और आर्थिक भेदभाव छोड़ो तो सही।।

पता : बरेली, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 7060240326

रघुवीर सिंह 'नाहर' के दोहे

चंद लकीरें हाथ की, लिखती नहीं विधान।
कठिन कर्म करते रहो, कहता है विज्ञान।।

शब्द बाण छोड़ो नहीं, रखो देश का ध्यान।
दिन-दिन घटता जा रहा, मान ज्ञान विज्ञान।।

जब तक रसना बोलती, मीठे-मीठे बोल।
आदर सब करते रहें, लगते हैं अनमोल।।

दुर्लभ कीट पतंग का, होने लगा विनाश।
रोज-रोज जंगल कटें, क्या जीवन की आस।।

लग्न तपस्या त्याग से, करले तू अनुबंध।
बदले में मिल जाएगा, बहुत बड़ा आनंद।।

मज़हब की दीवार से, आती नहीं सुगंध।
बढ़ती दिन-दिन जा रही, फैल रही दुर्गंध।।

चारों ओर हैं भेडिये, चहुँ दिशि है सैलाब।
नई पौध बचकर रहो, छिन ना जाए ख्वाब।।

बढ़ा रहे क्यों देश में, वैचारिक आक्रोश।
समृद्ध बनने में लगे, अपना पूरा जोश।।

छोड़ दिया था गाँव को, बिकने लगा ज़मीर।
देख लिया आकर शहर, बनकर रहे फ़कीर।।

निजीकरण सब हो रहा, नहीं हो रहा काम।
अगर अभी चेते नहीं, भुगतोगे अंजाम।।

जीवन में रखना सदा, एक बात का ध्यान।
मनसा वाचा कर्मणा, ना करना अपमान।।

घर-आँगन रोशन नहीं, ना मानव से मेल।
ऐसे घर में क्या रहें, जहाँ घृणा का खेल।।

ओढ़ी थी कुछ टहनियाँ, पहने थे कुछ पात।
मूलनिवासी देश के, किये नहीं उत्पात।।

चकाचौंध में आ गये, पीछे छूटा गाँव।
याद आज भी आ रही, पीपल वाली छाँव।।

धीरे-धीरे बन रहा, एक भयंकर जाल।
आगे-आगे देखना, कैसा होगा हाल।।

जीवन में संघर्ष को, सदा रहें तैयार।
रोक न पाएगी कभी, तेज धार तलवार।।

बुझते दीपक जल गये, बहुत किया अहसान।
मिथक तोड़कर चल दिये, थे वह भीम महान।।

चलती जब-जब लेखनी, बनकर पैनी धार।
सदा देश आगे बढ़ा, मिला प्यार ही प्यार।।

बन जाती हैं सुर्खियाँ, जिसके हाथ कमान।
रहे हवा में तैरता, मानव का अभिमान।।

आँसू पीकर जी रहे, घटता दिन-दिन मान।
सीने पर पत्थर धरा, मेरा देश महान।।

नयन कभी रोयें नहीं, कभी न झलकें भाव।
सहज-सहज चलती रहे, यह जीवन की नाव।।

पता : अलवर, राजस्थान
मोबाइल नंबर : 9413058580

बी.आर. बुद्धप्रिय की कविताएँ

नया सवेरा नया जोश

नया सवेरा नये जोश के
साथ मनाएँगे हम नया साल।
मिटा देंगे इस सरजमी से
असमानता का अमान्य जाल।।
मुबारक नया साल उम्मीदों के
नये विकास की कड़ी बनाने को
शिक्षा की अलख जगाने को
इंसान को कर्तव्य के प्रति तत्पर बनाने को।।
बदल सकते हैं जमाने के रुख को
दृढ़ संकल्प की जरूरत है अपनाने को।
हसरत पूरी हो जाएगी एक दिन
व्यवस्था परिवर्तन की आवश्यकता को।।
पाँच हजार साल की सड़ियल व्यवस्था को
यदि समूल नष्ट करना है, तो
गुलाम मानसिकता को वैज्ञानिक
सोच में परिवर्तित करना है।।
जिंदगी एक दिन फिसल जाएगी
मछली की तरह।
देखते रह जाओगे व्यवस्था को
एक ठगे मुसाफिर की तरह।।
अभी भी मानसिकता दूषित है
कुव्यवस्था को जिंदा रखने वालों की।
जब तक संविधान है हमारा
इच्छा पूरी नहीं होने देंगे देश के गद्दारों की।।

भवतु सब्ब मंगलम्!

चिर परिचित सभ्यता और संस्कृति की
पहचान ही श्रेष्ठता
भवतु सब्ब मंगलम् की
पहल ही हमारी सुख-समृद्धि
तथागत के सुख-शांति का मिशन
पल्लवित, पुष्पित हो जग में
आदि से अंत तक बिखरेगी खुशबू चहुँ दिशि में
जीवन-मूल्य परख बने
प्रसन्नता व सुख मिशन ऐसा हो अपना
व्यक्ति, देश, समाज, परिवार अमन के
तोहफे से स्वागत की तैयारी
न किसी को दुःख हो न किसी को भय हो
न सिसकियों की सुगबुगाहट
अमानवीय, असामाजिक व्यवस्था का हो सत्यानाश
अभिशप्त कराहती आवाजें
अपनी पहचान बनाएँ क्षितिज पर बार-बार
पारंपरिक अतीत की खिड़की और झराखों से
उन्मुक्त होकर बह चले मंद मुस्कान
पारदर्शी हो विजन हर मानव का
छाया-प्रतिछाया, बिंब-प्रतिबिंब सब एक हो
सर्वनाश हो मान्यताओं का
महके सदा जीवन की बगिया
पूरी हो सबकी अभिलाषा
हो संचार जीवन में नई ऊर्जा का।

पता : बरेली, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 9412318482

नविला सत्यादास की कविताएँ

मैं श्रेष्ठ हूँ

मैं ही हूँ श्रेष्ठ
ऐसा दम भरने वाले
कभी समझ ही न पाये
कि श्रेष्ठता को मनवाना नहीं पड़ता
कुलश्रेष्ठ जताना नहीं पड़ता
जैसे सागर हो या बादल
धरती हो या आसमां
इनकी गहराई-अनन्ता
विस्तृतता-विशालता
उर्जा से भरे
सबके जीवन में भरते रहते हैं जिंदगी
मगर तुम्हारी श्रेष्ठता का ख्याल भर ही
उफ! कितना बीभत्स है
जमाने भर के लिए
फैलाता है तुच्छता का भाव
दीनता बांटने में जुटा रहता है
तुम्हारी श्रेष्ठता से आती है घिन्न
हाँ! ठीक वैसे
जैसे 'मैला' शब्द कहने भर से
नासिका में भर जाती है बदबू
और तन जाती हैं भृकुटियाँ
जी मिचलाने लगता है
क्या तुम ऐसी श्रेष्ठता पर करते हो गर्व?

जंग

एक ऐसा तिरस्कार
जो छुटपन से अबूझ पहेली-सा
डर बनकर मेरे साथ पलता रहा
औ वो पूरी दीदा-दलेरी से
उच्चता का पट्टा चमकाए
मुझ पर जाति-हीनता की जुगत चलता रहा
जिससे मैं हमेशा ऐसे बचकर निकलता
जैसे कुत्तों से ख़ौफजदा कोई आगन्तुक
हमेशा नये मोहल्ले, गली, घर में
घुसने से पहले रहता है आशंकित
कि न जाने कहाँ
कोई पालतू हो या आवारा
कब नोच ले उसकी टाँग
मगर वक्त के दरीचों से जाना
कि वो मेरा डर
मेरी कमजोरियाँ नहीं थीं
उसकी थोपी हुई धार्मिक दासता थी
और मेरी अज्ञानता,
मेरी अनभिज्ञता।
लेकिन .....
अब अनुभवों के बेलचों से
अपनी सारी अज्ञानता उलीच कर
पूर्ण स्वाभिमान, आत्मविश्वास से
आत्मसम्मान की जंग लड़ रहा हूँ
और आदमियों की बस्ती से
हकलाए कुत्तों को
खदेड़ने के प्रयासों में जुटा हूँ।

पता : पटियाला, पंजाब
मोबाइल नंबर : 9463615861

एस. एन. प्रसाद की कविताएँ

आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन

विचार हमारा यदि
आंबेडकरवादी होगा
सब कुछ बदल जाएगा।
आंबेडकरमय सारा विश्व होगा
बुद्धमय भी हो जाएगा।

शुद्ध संस्कार
यथार्थ से ओत-प्रोत
मैत्री भाव 'गोल' संग
स्वतः सबमें आएगा।

आइए फिर देर क्यों
ग्रहण करें सदस्यता
बरेली, संगठन का
साक्षी बन जाएगा।

देश के हर भाग से
सुधी साहित्यकारगण
पहुँचकर बरेली में
इतिहास नव बनाएँगे।

समता, सद्भाव, प्यार
होगा आधार और
एकता का दीप
सब मिलकर जलाएँगे।

कोई पदलोलुप नहीं
झगड़ा-तकरार नहीं
बड़े और छोटे की
आपस में रार नहीं।

विश्व का अकेला यह
संगठन बेजोड़ है
विशिष्टियाँ गिनाऊँ क्या
करोड़ों-करोड़ हैं।

लड़ाई

विद्वानों में शब्दबाण से रोज लड़ाई
वैचारिक मतभेद किन्तु न हाथापाई
फितरत यह वर्चस्व भावना है सबमें
करना अपनी लोगों से दिन-रात बड़ाई।

अपने-अपने मत सबके हैं अलग-अलग
कम ही हैं विद्वान धुरन्धर, अतिशय ठग
जोड़-तोड़ का काम लक्ष्य कुछ और नहीं
पथ से विचलित दिशाहीन भटके पग-पग।

दूरदृष्टि से दूर, न उनके अंदर चिंतन
नहीं चाहते करना कोई भी परिवर्तन
सदियाँ बीती, कुत्सित किन्तु विचार न बदले
घिसे-पिटे विक्षिप्त भाव पर रुदन-नर्तन।

साहित्यिक दुर्दशा देखकर हुए अग्रसर
जोड़ रहे आंबेडकरवादी सुधी प्रखर
किन्तु यथास्थितिवादी को रास नहीं यह
जड़ें उखड़ने का लगता है क्षण-क्षण डर।

प्रखर जी के साथ जुड़ रहे चिंतक सारे
बाबा साहेब के विचार हैं सबको प्यारे
उखड़ रहे हैं खेमे, देखो मची खलबली
तथाकथित विद्वान आज आखिर में हारे।

पता : लखनऊ, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 7080408886

राधेश विकास की कविताएँ

वैश्विक संगठन 'गोल'

वैश्विक परिदृश्य सम्यक दृष्टि।
लक्ष्य मानवता समता सृष्टि।।
बंधुत्व की नूतन अवधारणा।
आभार जिनवेक मत विशिष्ट।।
चतुर्दिक बिखरे मंगलकामना।
शाम ना हो, सदा ऐसे करो सामना।
नूतन दिशा हो उत्कृष्ट अवधारणा।
प्रेषित उन्हें हार्दिक धम्मकामना।।
घोर तम में जो करे पथ-प्रदर्शन।
आखिर कब तक चलेगा छद्म नर्तन।।
जो भटके हैं युगों-युगों से बने विपथी।
आओ मिलकर कराएँ शाश्वत दर्शन।।

अपना-अपना दाँव

एक नामी पहलवान,
जिसका फैला चारों ओर कीर्तिमान।
ऐसा कोई नहीं था, जो उसके आगे ठहर सके,
बड़े-बड़े पहलवान नतमस्तक हुये,
नहीं मैदान में उतर सके।
यह बात एक नेता को खलने लगी,
सोचकर उल्टी साँस चलने लगी।
''यदि मेरे आगे इसका ये हाल रहा जारी,
तो बेटा कर ले, जीते जी मरने की तैयारी।
नेता के रहते कोई पहलवान बाजी मार ले जाय,
यह हो नहीं सकता, मुझको मेरी लफ्फाजी मार ले जाय।
इसी तरह खुद को कई दिनों तक कोसा,
फिर एक दिन अचानक एक युक्ति सोचा।
पहलवान को बुलाया,
खूब खिलाया-पिलाया,
फिर अपनी सोच को अमली जामा पहनाने लगा,
पहलवान को मन की बात बताने लगा।
बोला- मैं भी नेतागिरी छोड़कर पहलवानी करना चाहता हूँ,
तुम्हारी तरह दुनिया को अपनी दीवानी करना चाहता हूँ।
पर मेरी एक शर्त है, स्वीकार करना होगा,
तुम्हें मेरे ही खिलाफ मैदान में उतरना होगा।
अरे डरो मत, जैसा कहता हूँ, बस वैसा करो,
पहलवानी से कुछ नहीं कर पाये, मेरी मानो ऐश करो।
अपने साथ-साथ पीढ़ियों का कर उद्धार जाओ,
पूरे पंद्रह लाख दूँगा, बस एक बार मुझसे हार जाओ।
पहलवान सकपकाया, सहमा, फिर सोचकर बोला,
मैं अपने जीवन की अनमोल पूँजी को यूँ ही नहीं गँवा सकता,
जब तक मेरे बाजुओं में दम है, कोई नहीं हरा सकता।
नेता बड़े धैर्य से सुनकर बोला,
पहलवान की कमजोर नब्ज टटोला,
स्व-कल्याण हेतु जोखिम उठाया,
मान-अपमान से ऊपर उठो, भगवद गीता का पाठ सुनाया।
पाठ सुनते पहलवान द्रवित हो गया,

मान-अपमान, लाभ-हानि, जीवन-मरण, जस-अपजस के भाव से रहित हो गया।
उठा, लंगोटा चढ़ाया और मैदान में उतरने के लिए बेताब,
सोती आँखों के भले न पूरे हुये हों,
पर खुली आँखों के पूरे होते ख्वाब।
यह सब देखकर नेता के होठों पर रहस्यमयी मुस्कान थिरकने लगी,
अरमानों के पावों में जैसे घुँघरू बजने लगा।
चारों ओर शोर हुआ, दिन, समय किया गया नियत,
इस अनोखी कुश्ती को देखने की
सभी उठाने लगे जहमत।
फिर समय से कुश्ती हुई,
जनता ने देखी पहलवान की
अप्रत्याशित हार,
जनता, जनता ठहरी
बिना विश्लेषण करने लगी नेता की जय-जयकार।
फिर वादे के मुताबित पहलवान बोला,
पहले पंद्रह लाख दीजिए, फिर उठाकर जाइए झोला।
नेताजी बड़े इत्मीनान से दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोले,
अपने कई मुखौटों के मुँह एक साथ खोले।
सुनो पहलवान!
समझो अपना ठाँव-कुठाँव,
तुम अपना खेल रहे थे,
मैं अपना खेल रहा था दाँव।

पता : प्रयागराज, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 9956824322

कुंवर नाजुक की गज़ल

जब से झुककर उन्हें हम नमन कर रहे।
वो झुकाने का हमको यतन कर रहे।।

लूटकर वो हमारे गुलिस्तान को।
देखों हमें बे चमन कर रहे।।

छीन कर वो हमारी ही तहज़ीब को।
हम सभी को यहाँ बे अमन कर रहे।।

आग घर में लगाकर हमारे वही।
क्यों हमारा ही लंका दहन कर रहे।।

जब से अपना उन्हें मान बैठे हैं हम।
तब से ही वो हमारा दमन कर रहे।।

पता : एवंती, चंदौली, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 9506427720

देवचंद्र भारती 'प्रखर' की कविताएँ

कटु यथार्थ

हम पुरुषों को सुधारने में
ऊर्जा नही खपाओ।
ऐ महिलाओं! कब सुधरोगी
पहले तुम बतलाओ।।

कटु यथार्थ है, हम पुरुषों ने
कुलटा को भी चाहा।
मार-पीटकर भी उसके ही
संग जीवन को निबाहा।।

पढ़ी-लिखी तुम सब महिलाएँ
अहंकार करती हो।
पैसे और नौकरीवालों से ही
प्यार करती हो।।

बेरोजगार युवाओं से
कितनों ने की है शादी?
पहले इसका जवाब दो
फिर बनना यथार्थवादी।।

नारीवाद की पों-पों

लिंगवाद की बातें
समतावाद नही है।
आंबेडकरवाद का हिस्सा
नारीवाद नही है।।

आंबेडकरवादी चिंतन को
समझो और जानो।
पहले सच्चे आंबेडकरवादी
को पहचानो।।

नारीवाद की पों-पों से
हो रहा प्रदूषण।
स्त्री-पुरुष के बीच दूरियाँ
बढ़ती क्षण-क्षण।।

सामाजिक आंदोलन में
आयी है बाधा।
कैसी क्रांति करेगा
जो है हिस्सा आधा।।

चन्दौली, उत्तर प्रदेश
मो.: 9454199538

सुनीता बौद्ध की कविताएँ

हमारे तबके में हमने देखा

हमारे तबके में हमने देखा,
आज भी बहुजन भटक रहे हैं।
न छोड़ी इन्होंने पुरानी रस्में,
पाखंडों में अटक रहे हैं।

जयभीम कहने में ये शरमाएँ,
पाहन पूजत नहीं लजाएँ।
दौड़े-दौड़े जाए उसी दर,
जहाँ ताले जाति के लटक रहे हैं।
हमारे तबके में हमने देखा,
आज भी बहुजन भटक रहें हैं।

तन-मन, धन सब अपना लुटावें।
चक्कर नित मंदिर के लगावें।
जातिवाद का गरल अनोखा,
सदी कितेक से गटक रहे हैं।
हमारे तबके में हमने देखा,
आज भी बहुजन भटक रहे हैं।

चाटुकारिता जी भर करते।
गैरों के लिए निज से लड़ते।
स्वाभिमान को रखें ताक पर,
सिर उन्हीं के पगों में पटक रहे हैं।
हमारे तबके में हमने देखा,
आज भी बहुजन भटक रहे हैं।

करती हूँ आगवानी

करती हूँ आगवानी बुद्ध की शरण जो आए।
उनका भी है स्वागत जो आने का मन बनाएँ।

पंचशील का ये मार्ग सबसे बड़ा है गहना।
जाना है बस उसी ने जिसने कभी है पहना।
सहानुभूति और करुणा जीवन आपस रहें बनाए।

सब ढोंग और गुलामी अज्ञानता को त्यागे।
सज्ञान, शील, करुणा जीवन तुम्हारे जागे।
जीवन की राह में तुम बनकर के दीप आए।

हर आदमी का जीवन होता नहीं सरल है।
धम्म ज्ञान के बिना तो जीवन बना गरल है।

उत्तम ड़गर सहारे कल्याण पथ जो आए।
बिन धम्म के यहाँ पर प्रज्ञा नहीं जगेगी।

दुनियाँ के सच रतन से नहीं जिंदगी सजेगी।
पथगामिनी सुनीता तुम्हें बार-बार समझाए।

पता : टुंडला, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 9058526830

सूरजपाल की कविता

आंबेडकरी आया गाँव तक

कलम उठाया जब भीम ने,
हमको इंसान बना दिया।
जानवरों से ऊपर उठाकर
आदमियत से मिला दिया।
खुद भूखे रहकर
हमको अन्न खिला दिया।
आसमान से ऊँचा उठकर,
हमको जीना सीखा दिया।
इसलिए मैं भी आंबेडकर की
मशाल लेकर निकल पड़ा।
गाँव-गाँव, शहर-शहर में,
अलख जगाने निकल पड़ा।
कलम चलाता मैं जाऊँ,
लिखकर साहित्य कुछ कर जाऊँ।
शिक्षित हूँ, तो प्रमाण दूँ,
जो न लिखूँ भीमराव को, तो
कलम तोड़ दूँ, सो जाऊँ।

पता : बरेली, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 9536176215

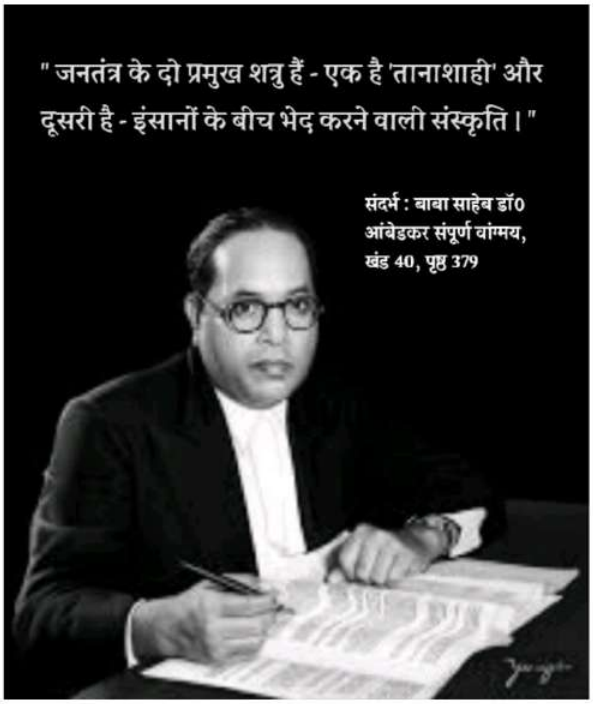

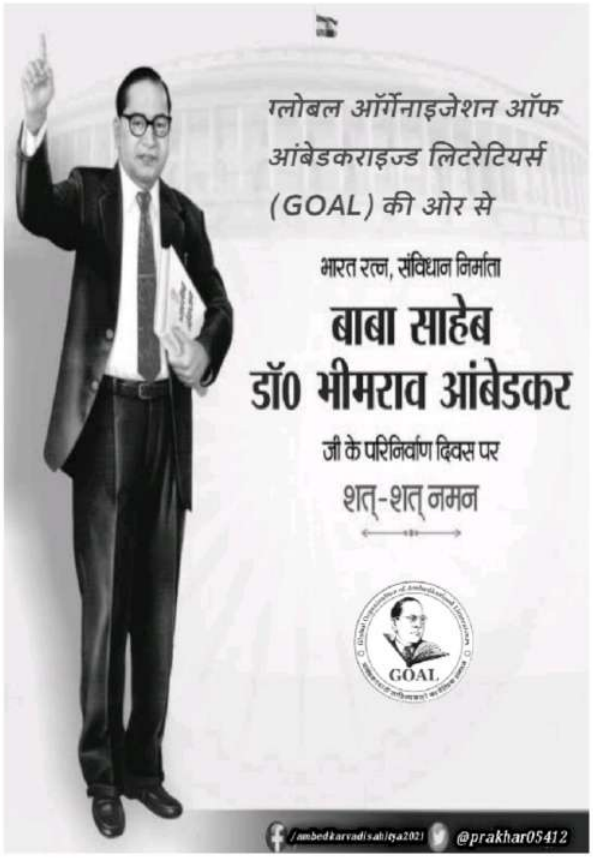

अमित कुमार बौद्ध की गज़लें

(1)

पढ़ा जब भीम को हमने छलक आँसू ही आये थे।
दे कुर्बानी बहुत ही भीम खुशियाँ खूब लाये थे।।

भरे कष्टों से जीवन को, हमें मुक्ति दिलाने में।
रमाबाई सहित बच्चों को अपने वो गँवाये थे।।

किये थे काम समता के लिए वो मुल्क में ऐसे।
कि मानों बुद्ध अरहत भीम के दिल में समाये थे।।

कबीरा, बुद्ध, फूले, भीम को तुम छोड़कर बहुजन।
उन्हें हो पूजते, जिनसे नहीं सम्मान पाये थे।।

बचा पाया नहीं मनुवाद के जुल्मों से वो हमको।
हजारों साल जिस भगवान के हम गीत गाये थे।।

कि ताजा खा रहे खाना, तो ये है भीम की कृपा।
कभी मनुवादियों का जूठन ही सब लोग खाये थे।।

नहीं पानी मिला पीने को उस तालाब का हमको।
कि कुत्ते, बिल्ली, बंदर, बैल सब जिसमें नहाये थे।।

न परछाई पड़े उन पर तुम्हारी, जान लो बहुजन।
इसी कारण वे तुमको गाँव के बाहर बसाये थे।।

दया करुणा थी मानवता, नहीं थी जाति कोई भी।
यहाँ पर भेद मानवों में ये मनुवादी कराये थे।।

करें पहचान सच और झूठ की कैसे सभी बहुजन।
कि अंधविश्वास और पाखंड में जमकर फँसाये थे।

'अमित' शोषित, दलित, पीड़ित सभी को देश भारत में।
नहीं शिक्षा मिले कानून भी ऐसे बनाये थे।।

(2)

भोर बहुजन हो गयी, अब जीओ खुशहाल तुम।
हम मिले, फिर क्यों पड़े आज भी बदहाल तुम।।

भुखमरी, असहाय, पीड़ित सभी क्यों हो तुम्हीं।
छीन हक अपने बनो आज मालामाल तुम।।

सह रहे दुत्कार क्यों जा किसी के घर यहाँ?
अब चलो पथ बुद्ध के भीम के हो लाल तुम।।

वीर कोरेगाँव के फिर दिखाओ वीरता।
कर हुकूमत ठोंक दो वीरता का ताल तुम।।

वोट के अधिकार से आज क्यों अपनी यहाँ।
कर गलत प्रयोग नुचवा रहे हो खाल तुम।।

मुद्दतों के बाद अवसर बदलने का मिला।
दो बदल इतिहास देखो न रोटी दाल तुम।।

बुद्ध, फूले, भीम की बात मानो तुम 'अमित'।
मत फँसो आडंबर औ ढोंग के अब जाल तुम।।

पता : रामपुर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल नंबर : 7983836622

पुस्तक समीक्षा

देवचन्द्र भारती प्रखर
चन्दौली, उत्तर प्रदेश
मो.: 9454199538

डॉ0 बुद्धप्रिय की कविताओं में अस्मिता एवं संघर्ष की भावना

आजकल 'अस्मिता' शब्द को लेकर लोग बहुत ही गंभीर हैं। कुछ लोग दलित-अस्मिता की बात करते हैं, तो कुछ लोग नारी-अस्मिता की बात करते हैं। कुछ लोग आदिवासी-अस्मिता की बात करते हैं। आखिर यह 'अस्मिता' कौन सी बला है? इसके बारे में विस्तार से जानने के लिए सबसे पहले इसके शब्दार्थ को जानना आवश्यक है। 'अस्मिता' का अर्थ है- अस्तित्व, अपने होने का भाव, अपनी सत्ता की पहचान। हिंदी साहित्य में पहली बार अज्ञेय ने 'आईडेंटिटी' के लिए' 'अस्मिता' शब्द का प्रयोग किया था। उसके बाद तो जैसे अस्मिता-विमर्श की होड़-सी लग गयी और अस्तित्ववादियों की संख्या में निरंतर वृद्धि होने लगी। वर्तमान में स्थिति यह है कि हर विमर्श का आधार 'अस्मिता' शब्द पर ही टिका है। यह सच है कि इस संसार में प्रत्येक प्राणी का अपना अस्तित्व है, लेकिन साथ ही यह भी सच है कि संसार के सभी प्राणियों का अस्तित्व एक-दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर है। किसी भी प्राणी के अस्तित्व को तभी खतरा होता है, जब वह अन्य प्राणियों के संपर्क में आता है किसी अकेले प्राणी के अस्तित्व को भला स्वयं से क्या खतरा हो सकता है? यदि वह आत्महत्या करके अपने अस्तित्व को नष्ट करने की बात सोचे, तो यह बात अलग है। संसार के हर प्राणी की तीन प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं- हवा, पानी और अनाज। पशु, पक्षी और मानव सभी प्राणी अपनी इन प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयासरत होते हैं। इस पर भी, मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताएँ पशु-पक्षियों की आवश्कताओं से संख्या में दो अधिक हैं अर्थात् मनुष्य को कपड़ा और मकान की भी आवश्यकता पड़ती है। इन प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति होने के साथ-साथ मनुष्य भावनात्मक संतुष्टि भी चाहता है। इसलिए जब बात अस्मिता की हो, तो विमर्श को केवल प्राण के अस्तित्व तक ही सीमित नहीं रखा जाता है, बल्कि विमर्श का प्रसार मनुष्य की भावना और कामना तक हो जाता है। प्रत्येक चेतनायुक्त मनुष्य चाहता है कि उसके साथ अन्य मनुष्य समता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व और प्रेम का व्यवहार करें। मनुष्य इन्हीं की पूर्ति के लिए विशेष संघर्ष करता है। अन्यथा, पशुओं जैसा जीवन व्यतीत करने के लिए विशेष संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। बात जब संघर्ष की हो और बुद्ध-आंबेडकर की बात न की जाए, तो बात अधूरी रह जाती है। ध्यातव्य है कि त्रिशरण के अंतर्गत दूसरी शरण ग्रहण करते हुए कहा जाता है- 'धम्मं शरणं गच्छामि।'' अर्थात् ''मैं धम्म (सिद्धांत) की शरण में जाता हूँ। ''इसी बात को बाबा साहेब ने अपने शब्दों में कहा है- ''संघर्ष करो। ''तथागत बद्ध और डॉ. आंबेडकर के इस कथन को अपने जीवन का सिद्धांत बनाकर अपनी अस्मिता के लिए निरंतर संघर्षरत रहे हैं- वरिष्ठ आंबेडकरवादी साहित्यकार डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय जी।

डॉ. बुद्धप्रिय जी केवल लिखते ही नहीं हैं,

बल्कि वे अपने लिखे हुये के अनुरूप जीवन भी जीते हैं। तात्पर्य यह है कि डॉ. बुद्धप्रिय जी की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं है। यही कारण है कि साहित्य जगत में उनका जितना सम्मान होता है, उससे कहीं अधिक सम्मान वे समाज में पाते हैं। डॉ. बुद्धप्रिय जी एक साहित्यकार होने के साथ-साथ समाजसेवी, शिक्षक और मिशनरी भी हैं। उन्होंने उक्त चारों क्षेत्रों में निरंतर धैर्यपूर्वक संघर्ष किया है। डॉ. बुद्धप्रिय जी का साहित्य उनके संघर्षशील जीवन-अनुभव की यथार्थ अभिव्यक्ति है। 'अपराजित' नामक यह कविता-संग्रह डॉ. बुद्धप्रिय जी का पाँचवाँ कविता-संग्रह है। इसके पूर्व उनके चार कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिसमें 'अभी वक्त है' (2005), 'बगावत' (2009), 'विद्रोह की चिंगारियाँ (2013), 'बहुजनों की हुँकार' (2014) आदि के नाम शामिल हैं। डॉ. बुद्धप्रिय जी ने अपनी कविताओं में केवल अपने संघर्ष को ही अभिव्यक्त नहीं किया है, बल्कि उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से वंचित वर्ग के लोगों को शिक्षित बनने, संगठित होने और संघर्ष करने की प्रेरणा भी दिया है। साथ ही, उन्होंने लोगों को शील और संस्कार का पालन करते हुए धम्मानुसार जीवन जीने का संदेश दिया है। डॉ. बुद्धप्रिय जी ने अपनी कविता 'लगाम' में वंचित वर्ग के लोगों को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक गुलामी से मुक्त होने के लिए सामाजिक आंदोलन करने का मार्ग बताया है। उनकी दृष्टि में इतिहास बदलने के लिए क्रांति करना आवश्यक है। डॉ. बुद्धप्रिय जी कहते हैं:

सदियों से अंधेरे में जीने वालों!
सामाजिक आंदोलन करो,
वैचारिक विस्फोट करो,
क्रांति करो,
इतिहास स्वयं बदल जाएगा।

डॉ. बुद्धप्रिय जी यह अच्छी तरह जानते हैं कि वंचित वर्ग के लोग कमजोर नहीं हैं, बल्कि एक सशक्त वर्ग द्वारा उन्हें कमजोर बनाया गया है। इसलिए वे वंचित वर्ग के लोगों को जागरूक करने के साथ-साथ सशक्त वर्ग के लोगों को आत्मसुधार करने चेतावनी भी देते हैं। क्योंकि उस वर्ग के लोग यदि अभी नहीं सुधरे, तो फिर वंचित वर्ग के लोगों की जागृति के बाद उन्हें पछताना पड़ेगा। भविष्य की बात तो दूर है, वर्तमान में परिणाम सामने है। 'बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय' की आवधारणा बनाकर सामाजिक आंदोलन करने वाले आंबेडकरवादी मिशनरी लोगों ने बहुत अधिक सामाजिक परिवर्तन कर दिया है। ऐसे ही आंबेडकरवादी मिशनरियों में एक नाम डॉ. बुद्धप्रिय जी का भी है। इसलिए डॉ. बुद्धप्रिय जी अपनी कविता 'बाध्य न करो' में सशक्त वर्ग के शोषक लोगों को संबोधित करके कहते है :

बहुजन हिताय
बहुजन सुखाय
की आँच
तुम्हारे सीने में चुभ जाएगी
हमारी लोक-कल्याण की भावना
टकटकी लगाकर देखते रहो।

वंचित वर्ग के जागरूक लोगों को संबोधित करते हुए डॉ. बुद्धप्रिय जी ने नये प्रतिमान और नये मुहावरे गढ़ने के लिए उत्साहित किया है। उनका मानना है कि वैज्ञानिक विचारों से अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। डॉ. बुद्धप्रिय जी ने विचार को एक धारदार हथियार के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार उन्होंने अमूर्त विचार को मूर्त रूप प्रदान किया है। यथा :

नये प्रतिमान, नये मुहावरे बनाओ
प्रतिष्ठा दाव पर लगी है

भोथरे वैज्ञानिक विचारों को
नुकीला बनाओ
धारदार हथियार से
सब कुछ कट जाता है।

डॉ. बुद्धप्रिय जी को समाज में चारों ओर अन्याय और अत्याचार का तूफान दिखाई देता है। इसलिए वे वंचित वर्ग के लोगों को संगठित होकर तूफानों से टकराने और तूफानों का रुख मोड़ने का आह्वान करते हैं। 'तूफान' कविता में वे उन्हें सदियों की ठुकरायी माटी में जान डालने के लिए उत्साहित करते हैं। माटी में जान डालने का तात्पर्य है- सोये हुये लोगों को जगाना यानी लोगों को आंदोलित करना। डॉ. बुद्धप्रिय जी के शब्दों में :

चारों तरफ अन्याय, अत्याचार का
तूफान ही तूफान है
वंचित समाज के लोगों, जागो!
तूफानों का रुख मोड़ दो
सदियों की ठुकरायी माटी में
जान डाल दो।

डॉ. बुद्धप्रिय जी की एक कविता है- 'चढ़ावा'। इस कविता की रचना उन्होंने तब की थी, जब सावन के अंतिम सोमवार को भुताकस्बे नामक स्थान पर उन्होंने वंचित वर्ग के युवाओं को काँवड़ियों के वेश में देखा था। काँवड़ियों की भीड़ के कारण सड़क पर तीन घंटे तक जाम लगा रहा, जिससे अन्य यात्रियों के साथ डॉ. बुद्धप्रिय जी को भी बहुत परेशानी हुई थी। इस कविता में डॉ. बुद्धप्रिय जी वंचित वर्ग के काँवड़ियों को धिक्कारा है। इस कविता को पढ़ते समय ऐसा जान पड़ता है, जैसे कि इस कविता में सीधी उक्ति है, लेकिन ऐसी बात नहीं है। इस कविता में सीधी उक्ति नहीं है, बल्कि टेढ़ी होती है अर्थात् वक्रोक्ति है। डॉ. बुद्धप्रिय जी ने वंचितों को कर्ज लेकर काँवड़ ढ़ोने के लिए कहते हैं, बच्चों को शिक्षित न करने के लिए कहते हैं, मनुस्मृति का पाठ पढ़ाने के लिए कहते हैं, सूदखोरों के आगे गिड़गिड़ाने के लिए कहते हैं। लेकिन उनके द्वारा ये बातें कहने का ढंग ठीक वैसा ही है, जैसे कि कोई नाराज होकर कहता है- ''हाँ-हाँ, ठीक है। लगे रहो। ''जबकि इस कथन में एक प्रकार का व्यंग्य है, नकार है, विरोध है। अवलोकनार्थ :

बदहाली और लाचारी में
कर्ज लेकर कावड़ ढोओ
बच्चों को शिक्षा मत दिलाओं
मनुस्मृति का पाठ पढ़ाओं
तुम्हारी सोच-समझ शुभ हो गयी
सूदखोर के पास गिड़गिड़ाओ
खूब चढ़ावा चढ़ाओ
पशु जैसा भेष बनाओं
इंसानियत की जड़ कटवाओ।

अपनी कविता 'आधी आबादी' में डॉ. बुद्धप्रिय जी ने भारत की संपूर्ण आबादी के लगभग आधे भाग वंचित-वर्ग के लोगों की हित-चिंता को अभिव्यक्त किया है। उनकी दृष्टि में उस वर्ग-हित के लिए लोकतांत्रिक तरीके से लड़ाई लड़ना अभी शेष है। इसलिए डॉ. बुद्धप्रिय जी वंचित वर्ग के लोगों को अमानवीय साम्राज्य के प्रति विद्रोह करने के लिए प्रेरित करते हैं। यथा :

जनतांत्रिक तरीके से लड़ाई अभी बाकी है
अमानुषिक साम्राज्य में
विद्रोह की चिंगारियाँ भड़का दो।

डॉ. बुद्धप्रिय जी दर्शन की उस परंपरा का निर्वहन करने वाले व्यक्ति हैं, जिस परंपरा में बुद्ध, कबीर, रैदास, फुले और आंबेडकर आदि महामानवों की गणना की जाती है।

इतिहास साक्षी है कि सम्राट अशोक और

कनष्कि ने बौद्ध धम्म का देश-विदेश में प्रचार प्रसार किया था। चूँकि डॉ. बुद्धप्रिय जी धम्मानुयायी हैं, इसलिए वे धाम्मिक विचार से प्रेरित होकर कार्य करते हैं। यही कारण है कि वे अपने अपको बुद्ध, कबीर, रैदास, अशोक कनिष्क के क्रांति की बुलंद आवाज कहते हैं तथा बुद्धचर्चा, सुत्तपिटक और धम्म-देशना के रुप में अपने आपको आरोपित करते हैं। अपनी इस भावना को उन्होंने 'दस्तावेज' कविता में क्रांतिकारी स्वर में व्यप्त किया है। डॉ. बुद्धप्रिय जी कहते हैं :

बुलंद आवाज हूँ मैं
नालंदा का प्राण हूँ मैं
बुद्धचर्चा, सुत्तपिटक की
धम्मदेशना हूँ मैं।

प्रायः प्रश्न पूछा जाता है कि 'धम्म' क्या है?

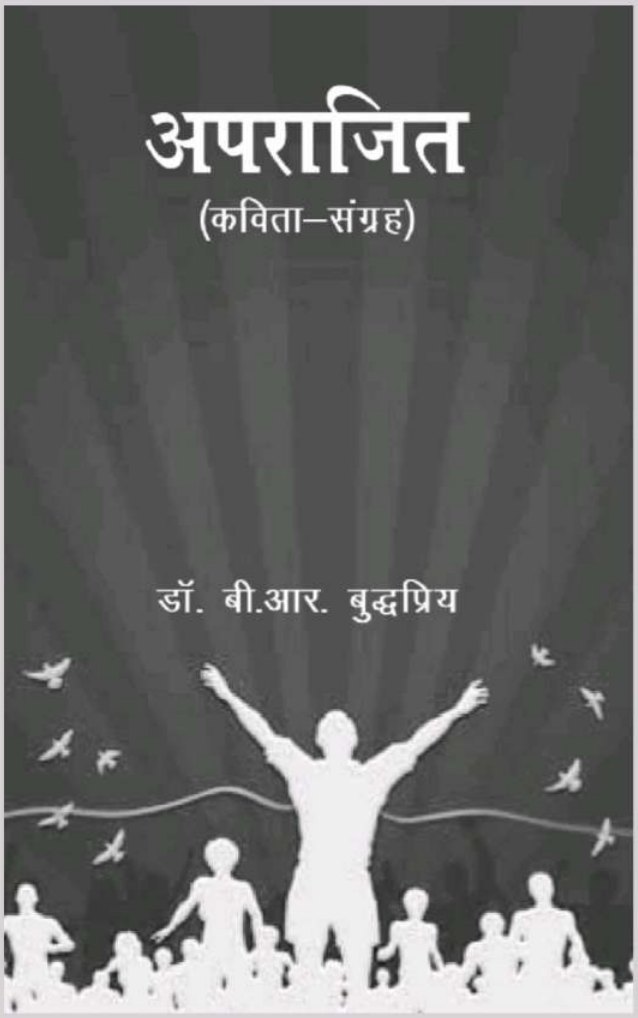

पुस्तक : अपराजित (कविता संग्रह)
रचनाकार : डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय
प्रकाशकः अक्षर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली
पृष्ठ : 96
मूल्य : 150/-
सम्पर्क : 9999803921, 9711255121

बुद्ध, कबीर, रैदास, अशोक,
कनिष्क के क्रांति की

इसका स्पष्ट है कि 'धम्म' बुद्ध की शिक्षाओं का नाम है। बुद्ध की शिक्षाओं का स्वरूप बहुत ही व्यापक है। उनकी शिक्षाओं में दुखपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने और सुखमय जीवन जीने के लिए अष्टांगिक मार्ग का समावेश है। बुद्ध के द्वारा बताया गया मार्ग पूर्णतः वैज्ञानिक मार्ग है, जो मनुष्य को मनुष्यता का अनुपालन करने के लिए प्रेरित करता है। 'अत्त दीपो

भव' का उपदेश देकर उन्होंने मनुष्य को आत्मनिर्भर बनकर शिक्षा, संघर्ष और संगठन के प्रति जागरूक होने के लिए इंगित किया। इस प्रकार 'धम्म' जीवन जीने की उत्तम शैली है। कवि डॉ. बुद्धप्रिय जी ने 'धम्म' को इसी रूप में अंगीकार किया है। इस प्रकार धम्म -यात्रा को एक उत्सव के रूप में देखते हैं। उन्होंने अपने जीवन में बहुत सी धम्म-यात्राएँ की हैं। अपनी धम्म-यात्राओं का वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक 'धम्म भूमि अवलोकन' (2020) में किया है। यही कारण है कि वे दूसरे लोगों को भी इस 'धम्म-यात्रा' रूपी उत्सव को जीने के लिए कहते हैं। डॉ. बुद्धप्रिय जी की कविता 'धम्म' की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

शिक्षा, संघर्ष और संगठन ही धम्म है

धम्म के लिए आचरण करो

धम्म-यात्रा उत्सव है

उत्सव को जीना सीखो।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि डॉ. बी.आर. बुद्धप्रिय जी की कविताएँ अस्मिता और संघर्ष की भावना से परिपूर्ण हैं। उनका मानना है कि अस्मिता के लिए किये जाने वाले संघर्ष में सम्यक दृष्टि अवश्य हो। सम्यक दृष्टि के लिए वे त्रिशरण को ग्रहण करने की प्रेरणा देते हैं। 'त्रिशरण' और डॉ आंबेडकर के 'त्रिसूत्र' में साम्य है। इसलिए त्रिशरण के संबंध में भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। डॉ. आंबेडकर के द्वारा बताये गये त्रिसूत्र (शिक्षा, संघर्ष और संगठन) को पूर्णरूपेण धारण करना त्रिशरण को अपनाने के समान है।

ग्लोबल आर्गेनाइजेशन ऑफ आंबेडकराइज्ड लिटरेटिअर्स (आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन) की ओर से धम्मदीक्षा दिवस (14 अक्टूबर) और संविधान दिवस (26 नवम्बर) की हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएँ।

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका के मंडल प्रतिनिधिगण

रुपचंद गौतम, दिल्ली, 9868414275
कर्मशील भारती, दिल्ली, 9968297866
विजय छाण, राजस्थान, 9983272626
प्रहलाद मीणा, राजस्थान, 9982553620
विनोद कुमार, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, 8765275887
प्रबुद्धनारायण बौद्ध, चन्दौली, उ.प्र., 9005441713
रमेश भारती, चन्दौली, उ.प्र., 9198555587
सूर्यमल बौद्ध, गाजीपुर, उ.प्र., 9919047757
नीरज कुमार नेचुरल, जौनपुर, उ.प्र., 8318543949
मुन्ना कुमार, जौनपुर, उ.प्र., 7075751143
विरेन्द्र सिंह दिवाकर, हरदोई उ.प्र., 8765076843
अमित कुमार बौद्ध, रामपुर, उ.प्र., 7983836622
लाकेश आजाद, इटावा, उ.प्र., 8847398166
पप्पूराम सहाय, झाँसी, उ.प्र., 6393572259

आगामी अंक

जनवरी-मार्च 2022

(संतकवि रविदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

संतकवि रविदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित आलेख, कविता, गीत, गजल, कहानी, नाटक आदि आमंत्रित हैं।

'आंबेडकरवादी साहित्य' पत्रिका की सदस्यता हेतु विवरण

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : 350/-
त्रैवार्षिक : 1000/-
द्विवार्षिक : 650/-
आजीवन : 7000/-

भुगतान विकल्प :

Bank Account Number : 35332395763
Account Holder : Devachandra Bharati
Bank Name : STATE BANK OF INDIA
IFSC Code : SBIN0012302
paytm PhonePe G Pay : 9454199538

ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ आंबेडकराइज्ड लिटरेटियर्स (GOAL)
(आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन)

आंबेडकरवादी साहित्यकार एवं आलोचक देवचंद्र भारती 'प्रखर' के मन में जब आंबेडकरवादी साहित्यकारों का एक संगठन बनाने का विचार आया, तो उन्होंने फेसबुक द्वारा इस संदर्भ में अपना प्रस्ताव उद्घोषित किया। संगठन के नामकरण के दौरान अनेक नामों में से डॉ0 राम मनोहर राव जी के द्वारा प्रस्तावित नाम "GOAL" को स्वीकार किया गया। पूर्वयोजना के तहत बाबा साहेब डॉ0 भीमराव आंबेडकर के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर दिनांक 6 दिसम्बर 2021, दिन सोमवार को 'प्रखर' जी के द्वारा "GOAL" की स्थापना की गयी तथा संगठन का प्रथम अध्यक्ष डॉ0 राम मनोहर राव जी को निर्वाचित किया गया। 'प्रखर' जी ने "GOAL" के उद्देश्यों और संगठन के पदाधिकारियों के दायित्व का वाचन किया।

गोल (GOAL) का उददेश्य :

1. आंबेडकरवादी चेतना से युक्त साहित्य-सृजन करना।
2. वैश्विक स्तर पर आंबेडकरवादी साहित्यकारों की खोज करके उन्हें आंबेडकरवादी साहित्य की धारा से जोड़ना।
3. आंबेडकरवादी साहित्य एवं पत्रिका का वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार करना तथा पत्रिका के सदस्यों /पाठकों की वृद्धि करना ।
4. आंबेडकरवादी कवि-गोष्ठी, साहित्य-सम्मेलन, सेमिनार आदि का समय-समय पर आयोजन करना ।
5. आंबेडकरवादी चेतना से संबंधित क्रियात्मक कार्यक्रम, जैसे- साहित्यकारों का सम्मान करने हेतु सामारोह आयोजित करना।

संगठन के पदाधिकारियों का कार्यकाल एवं कार्य :

अध्यक्ष का कार्यकाल : 2 वर्ष

अध्यक्ष के कार्य : 1. कार्यक्रम की अध्यक्षता करना ।
2. अपने कार्यकाल में कम से कम एक पुस्तक का लेखन /संपादन करना।
3. अपने कार्यकाल में कम से कम एक बार साहित्य-सम्मेलन, गोष्ठी अथवा सेमिनार करना।

उपाध्यक्ष का कार्यकाल : 2 वर्ष

उपाध्यक्ष के कार्य : 1. अध्यक्ष की अनुपस्थिति में कार्यक्रम की अध्यक्षता करना।
2. अध्यक्ष के सहयोगी के रुप में कार्य करना।

सचिव का कार्यकाल : 2 वर्ष

सचिव के कार्य : 1. सभी को कार्यक्रम से अवगत कराना।
2. कार्यक्रम के कार्यवृत्त का लेखन करना।
3. समस्त कागजी कार्य करना।

कोषाध्यक्ष का कार्यकाल : 2 वर्ष

कोषाध्यक्ष का कार्य : 1. कार्यक्रम के आय-व्यय का लेखा-जोखा रखना।

संगठन - सचिव का कार्यकाल : 2 वर्ष

संगठन सचिव का कार्य : 1. सचिव के कार्यो में सहयोग करना।

ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ आंबेडकराइज्ड लिटरेटियर्स (GOAL)

(आंबेडकरवादी साहित्यकारों का वैश्विक संगठन)

के समस्त साहित्यकारों की सूची :

1- डॉ० राम मनोहर राव, बरेली (अध्यक्ष)
2- मनोहर लाल प्रेमी, लखनऊ (उपाध्यक्ष)
3- देवचंद्र भारती 'प्रखर', चन्दौली (सचिव)
4- नीरज कुमार 'नेचुरल', जौनपुर (कोषाध्यक्ष)
5- वीरेन्द्र सिंह 'दिवाकर', हरदोई (संगठन सचिव)
6- अमित कुमार बौद्ध, रामपुर (संगठन सचिव)
7- डॉ० धर्मपाल बौद्ध (हैदराबाद, तेलंगाना)
8- श्यामलाल राही 'प्रियदर्शी' (बरेली, उत्तर प्रदेश)
9- डॉ० बी० आर० बुद्धप्रिय (बरेली, उत्तर प्रदेश)
10- रघुवीर सिंह 'नाहर' (अलवर, राजस्थान)
11- भूपसिंह भारती (नारनौल, हरियाणा)
12- प्रबुद्ध नारायण बौद्ध (चंदौली, उत्तर प्रदेश)
13- दिनेश चंद्र (चंदौली, उत्तर प्रदेश)
14- एस० एन० प्रसाद (लखनऊ, उत्तर प्रदेश)
15- आनंद कुमार 'सुमन' (सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश)
16- प्रो० जगदीश घनघाव (मुंबई, महाराष्ट्र)
17- राधेश विकास (प्रयागराज, उत्तर प्रदेश)
18- पप्पूराम सहाय (झाँसी, उत्तर प्रदेश)
19- सूरजपाल सूर्यवंशी (बरेली, उत्तर प्रदेश)
20- डॉ० नविला सत्यादास (पटियाला, पंजाब)